Website Link: mib.gov.in

जून 2024

लोकतंत्र का महापर्व

मन की बात

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का सम्बोधन

सूची क्रम

01 **प्रधानमंत्री का सन्देश** 1

02 **मुख्य आलेख**

2.1 **भारत में 18वीं लोकसभा चुनाव :** लोकतंत्र का महापर्व 12

2.2 **पेरिस ओलम्पिक 2024 :** नए जोश और नई उमंग के साथ रचेंगे नया कीर्तिमान 28

2.3 **मेरा उत्पाद, मेरा गौरव :** विकास और वैश्विक पहचान की यात्रा 40

2.4 **देश-विदेश में बढ़ रहा संस्कृत का मान** 48

03 **संक्षेप में**

3.1 माटी प्रेम और अदम्य साहस की मिसाल : **सिद्धो-कान्हू** 18

3.2 एक पेड़ माँ के नाम 20

3.3 विश्व में भारत की विशिष्ट पहचान 32

3.4 IYD 2024 : भारत और विश्व ने कैसे मनाया योग दिवस 36

04 **लेख/साक्षात्कार**

4.1 परिवर्तन के बीज बो रहा 'एक पेड़ माँ के नाम' - **डॉ. शिव कुमार शर्मा** 24

4.2 वृक्षारोपण का महत्त्व - **चामी मुर्मु** 26

4.3 आज के सन्दर्भ में संस्कृत भाषा की प्रासङ्गिकता - **डॉ. बलदेवानन्द सागर** 54

05 **प्रतिक्रियाएँ** 57

प्रधानमंत्री का सन्देश

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार

आज वो दिन आ ही गया, जिसका हम सभी फरवरी से इंतजार कर रहे थे। मैं 'मन की बात' के माध्यम से एक बार फिर आपके बीच, अपने परिवारजनों के बीच आया हूँ। **एक बड़ी प्यारी सी उक्ति है– 'इति विदा पुनर्मिलनाय' इसका अर्थ भी उतना ही प्यारा है, मैं विदा लेता हूँ, फिर मिलने के लिए। इसी भाव से मैंने फरवरी में आपसे कहा था कि चुनाव नतीजों के बाद फिर मिलूँगा और आज, 'मन की बात' के साथ, मैं आपके बीच फिर हाजिर हूँ।** उम्मीद है आप सब अच्छे होंगे, घर में सबका स्वास्थ्य अच्छा होगा और अब तो मानसून भी आ गया है और जब मानसून आता है, तो मन भी आनंदित हो जाता है। आज से फिर एक बार हम 'मन की बात' में ऐसे देशवासियों की चर्चा करेंगे, जो अपने कामों से समाज में, देश में बदलाव ला रहे हैं। हम चर्चा करेंगे, हमारी समृद्ध संस्कृति की, गौरवशाली इतिहास की और विकसित भारत के प्रयास की।

साथियो, फरवरी से लेकर अब तक, जब भी महीने का आखिरी रविवार आने को होता था, तब मुझे आपसे इस संवाद की बहुत कमी महसूस होती थी, लेकिन मुझे ये देखकर बहुत अच्छा भी लगा कि इन महीनों में आप लोगों ने मुझे लाखों सन्देश भेजे। **'मन की बात' रेडियो प्रोग्राम भले ही कुछ महीने बंद रहा हो, लेकिन, 'मन की बात' का जो स्पिरिट है, देश में, समाज में, हर दिन अच्छे काम, नि:स्वार्थ भावना से किए गए काम, समाज पर पॉजिटिव असर डालने वाले काम निरंतर चलते रहे। चुनाव की ख़बरों के बीच निश्चित रूप से मन को छू जाने वाली ऐसी ख़बरों पर आपका ध्यान गया होगा।**

साथियो, मैं आज देशवासियों को धन्यवाद भी करता हूँ कि उन्होंने हमारे संविधान और देश की लोकतांत्रिक व्यवस्थाओं पर अपना अटूट विश्वास दोहराया है। 24 का चुनाव, दुनिया का

सबसे बड़ा चुनाव था। दुनिया के किसी भी देश में इतना बड़ा चुनाव कभी नहीं हुआ, जिसमें 65 करोड़ लोगों ने वोट डाले हैं। मैं चुनाव आयोग और मतदान की प्रक्रिया से जुड़े हर व्यक्ति को इसके लिए बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 30 जून का ये दिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। **इस दिन को हमारे आदिवासी भाई-बहन 'हूल दिवस' के रूप में मनाते हैं। यह दिन वीर सिद्धो-कान्हू के अदम्य साहस से जुड़ा है, जिन्होंने विदेशी शासकों के अत्याचार का पुरजोर विरोध किया था। वीर सिद्धो-कान्हू ने हजारों संथाली साथियों को एकजुट करके अंग्रेजों का जी-जान से मुकाबला किया** और जानते हैं; ये कब हुआ था ? ये हुआ था **1855 में, यानी ये 1857 में भारत के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम से भी दो साल पहले हुआ था, तब झारखंड के संथाल परगना में हमारे आदिवासी भाई-बहनों ने विदेशी शासकों के खिलाफ़ हथियार उठा लिया था।** हमारे संथाली भाई-बहनों पर अंग्रेजों ने बहुत सारे अत्याचार किए थे, उन पर कई तरह के प्रतिबंध भी लगा दिए थे। **इस संघर्ष में अद्भुत वीरता दिखाते हुए वीर सिद्धो और कान्हू शहीद हो गए। झारखंड की भूमि के इन अमर सपूतों का बलिदान आज भी देशवासियों को प्रेरित करता है।** आइए सुनते हैं संथाली भाषा में इन्हें समर्पित एक गीत का अंश –

मेरे प्यारे साथियो, अगर मैं आपसे पूछूं कि दुनिया का सबसे अनमोल रिश्ता कौन-सा होता है तो आप ज़रूर कहेंगे– 'माँ'। हम सबके जीवन में 'माँ' का दर्ज़ा सबसे ऊँचा होता है। माँ, हर दुःख सहकर भी अपने बच्चे का पालन-पोषण करती है। हर माँ, अपने बच्चे पर हर स्नेह लुटाती है। **जन्मदात्री माँ का ये प्यार हम सब पर एक कर्ज़ की तरह होता है, जिसे कोई चुका नहीं सकता। मैं सोच रहा था, हम माँ को कुछ दे तो सकते नहीं, लेकिन, और कुछ कर सकते हैं क्या ? इसी सोच में से इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस पर एक विशेष अभियान शुरू किया गया है,**

इस अभियान का नाम है– 'एक पेड़ माँ के नाम'। मैंने भी एक पेड़ अपनी माँ के नाम लगाया है। मैंने सभी देशवासियों से, दुनिया के सभी देशों के लोगों से ये अपील की है कि अपनी माँ के साथ मिलकर या उनके नाम पर एक पेड़ जरूर लगाएँ और मुझे ये देखकर बहुत खुशी है कि माँ की स्मृति में या उनके सम्मान में पेड़ लगाने का अभियान तेज़ी से आगे बढ़ रहा है। लोग अपनी माँ के साथ या फिर उनकी फोटो के साथ पेड़ लगाने की तस्वीरों को सोशल मीडिया पर साझा कर रहे हैं। हर कोई अपनी माँ के लिए पेड़ लगा रहा है, चाहे वो अमीर हो या गरीब, चाहे वो कामकाजी महिला हो या गृहिणी। **इस अभियान ने सबको माँ के प्रति अपना स्नेह जताने का समान अवसर दिया है। वो अपनी तस्वीरों को #Plant4Mother और #एक_पेड़_माँ_के_नाम, इसके साथ साझा करके दूसरों को प्रेरित कर रहे हैं।**

साथियो, इस अभियान का एक और लाभ होगा। **धरती भी माँ के समान हमारा खयाल रखती है। धरती माँ ही हम सबके जीवन का आधार है, इसलिए हमारा भी कर्तव्य है कि हम धरती माँ का भी खयाल रखें।** माँ के नाम पेड़ लगाने के अभियान से अपनी माँ का सम्मान तो होगा ही होगा, धरती माँ की भी रक्षा होगी। पिछले एक दशक में भारत में सबके प्रयास से वन क्षेत्र का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है। अमृत महोत्सव के दौरान, देशभर में 60 हज़ार से ज़्यादा अमृत सरोवर भी बनाए गए हैं। अब हमें ऐसे ही माँ के नाम पर पेड़ लगाने के अभियान को गति देनी है।

मेरे प्यारे देशवासियो, देश के अलग-अलग हिस्सों में मॉनसून तेज़ी से अपना रंग बिखेर रहा है और बारिश के इस मौसम में सबके घर में जिस चीज़ की खोज शुरू हो गई है, वो है 'छाता'। **'मन की बात' में आज मैं आपको एक खास तरह के छातों के बारे में बताना चाहता हूँ। ये छाते तैयार होते हैं हमारे केरला में। वैसे तो केरला की संस्कृति में छातों का विशेष महत्त्व है। छाते, वहाँ कई परम्पराओं और विधि-विधान का अहम हिस्सा होते हैं, लेकिन मैं जिस छाते की बात कर रहा हूँ, वो हैं 'कार्थुम्बी छाता' और इन्हें तैयार किया जाता है केरला के अट्टापडी में। ये रंग-बिरंगे छाते बहुत शानदार होते हैं और खासियत ये, इन छातों को केरला की हमारी आदिवासी बहनें तैयार करती हैं।** आज देशभर में इन छातों की माँग

'एक पेड़ माँ के नाम'

माँ प्रकृति के प्रति स्तुति

बढ़ रही है। इनकी ऑनलाइन बिक्री भी हो रही है। **इन छातों को 'वट्टालक्की सहकारी कृषि सोसाइटी' की देखरेख में बनाया जाता है। इस सोसाइटी का नेतृत्व हमारी नारी शक्ति के पास है। महिलाओं के नेतृत्व में अट्टापडी के आदिवासी समुदाय ने एंटरप्रेन्योरशिप की अद्भुत मिसाल पेश की है। इस सोसाइटी ने एक बैंबू-हैंडीक्राफ्ट यूनिट की भी स्थापना की है। अब ये लोग एक रिटेल आउटलेट और एक पारम्परिक कैफ़े खोलने की तैयारी में भी हैं। इनका मकसद सिर्फ़ अपने छाते और अन्य उत्पाद बेचना ही नहीं, बल्कि ये अपनी परम्परा, अपनी संस्कृति से भी दुनिया को परिचित करा रहे हैं। आज कार्थुम्बी छाते केरला के एक छोटे से गाँव से लेकर मल्टीनेशनल कम्पनियों तक का सफ़र पूरा कर रहे हैं। 'लोकल के लिए वोकल' होने का इससे बेहतरीन उदाहरण और क्या होगा?**

मेरे प्यारे देशवासियो, अगले महीने इस समय तक पेरिस ओलिम्पिक शुरू हो चुके होंगे। मुझे विश्वास है कि आप सब भी ओलिम्पिक खेलों में भारतीय खिलाड़ियों का उत्साह बढ़ाने का इंतजार कर रहे होंगे। मैं भारतीय दल को ओलिम्पिक खेलों की बहुत-बहुत शुभकामनाएँ देता हूँ। हम सबके मन में टोक्यो ओलिम्पिक की यादें अब भी ताजा हैं। टोक्यो में हमारे खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने हर भारतीय का दिल जीत लिया था। टोक्यो ओलिम्पिक के बाद से ही हमारे एथेलिट्स पेरिस ओलिम्पिक की तैयारियों में जी-जान से जुटे हुए थे। सभी खिलाड़ियों को मिला दें, तो इन सबने करीब नाइन हंड्रेड – नौ सौ इंटरनेशनल कम्पटीशन में हिस्सा लिया है। ये काफी बड़ी संख्या है।

साथियो, पेरिस ओलिम्पिक में आपको कुछ चीज़ें पहली बार देखने को मिलेंगी। शूटिंग में हमारे खिलाड़ियों की प्रतिभा निखरकर सामने आ रही है। टेबल-टेनिस में मैन और वूमैन दोनों टीमें क्वालीफाई कर चुकी हैं। भारतीय शॉटगन टीम में हमारी शूटर बेटियाँ भी शामिल हैं। इस बार कुश्ती और घुड़सवारी में हमारे दल के खिलाड़ी उन कैटेगरीज में भी कम्पीट करेंगे, जिनमें पहले वे कभी शामिल नहीं रहे। इससे आप ये अनुमान लगा सकते हैं कि इस बार हमें खेलों में अलग लेवल का रोमांच नज़र आएगा। आपको ध्यान होगा, कुछ महीने पहले वर्ल्ड पैरा एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में हमारी बेस्ट परफॉरमेंस रही है। वहीं चेस और बैडमिंटन में भी हमारे खिलाड़ियों ने परचम लहराया है। अब पूरा देश ये उम्मीद कर रहा है कि हमारे खिलाड़ी ओलम्पिक्स में भी बेहतरीन प्रदर्शन करेंगे। इन खेलों में मेडल्स भी जीतेंगे और देशवासियों का दिल भी जीतेंगे। **आने वाले दिनों में मुझे भारतीय दल से मुलाकात का अवसर भी मिलने वाला है। मैं आपकी तरफ से उनका उत्साहवर्धन करूँगा और हाँ.. इस बार हमारा Hashtag #Cheer4Bharat है। इस हैशटेग के ज़रिए हमें अपने खिलाड़ियों को चियर करना है... उनका उत्साह बढ़ाते रहना है, तो मोमेंटम को बनाए रखिए... आपका ये मोमेंटम...भारत का मैजिक, दुनिया को दिखाने में मदद करेगा।**

मेरे प्यारे देशवासियो, मैं आप सभी के लिए एक छोटी-सी ऑडियो क्लिप प्ले कर रहा हूँ।

इस रेडियो कार्यक्रम को सुनकर आप भी हैरत में पड़ गए ना! तो आइए, आपको इसके पीछे की पूरी बात बताते हैं। दरअसल ये कुवैत रेडियो के एक प्रसारण की क्लिप है। अब आप सोचेंगे कि बात हो रही है कुवैत की, तो वहाँ हिन्दी कहाँ से आ गई ? दरअसल, **कुवैत सरकार ने अपने नेशनल रेडियो पर एक विशेष कार्यक्रम शुरू किया है और वो भी हिन्दी में। 'कुवैत रेडियो' पर हर रविवार को इसका प्रसारण आधे घंटे के लिए किया जाता है। इसमें भारतीय संस्कृति के अलग-अलग रंग शामिल होते हैं। हमारी फिल्में और कला जगत से जुड़ी चर्चाएँ वहाँ भारतीय समुदाय के बीच बहुत लोकप्रिय हैं। मुझे तो यहाँ तक बताया गया है कि कुवैत के स्थानीय लोग भी इसमें खूब दिलचस्पी ले रहे हैं।** मैं कुवैत की सरकार और वहाँ के लोगों का हृदय से धन्यवाद करता हूँ, जिन्होंने ये शानदार पहल की है।

साथियो, आज दुनियाभर में हमारी संस्कृति का जिस तरह गौरवगान हो रहा है, उससे किस भारतीय को खुशी नहीं होगी! अब जैसे **तुर्कमेनिस्तान में इस साल मई में वहाँ के राष्ट्रीय कवि की 300वीं जन्म-जयंती मनाई गई। इस अवसर**

कुवैत में पहला हिंदी रेडियो प्रसारण

पर तुर्कमेनिस्तान के राष्ट्रपति ने दुनिया के 24 प्रसिद्ध कवियों की प्रतिमाओं का अनावरण किया। इनमें से एक प्रतिमा गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जी की भी है। ये गुरुदेव का सम्मान है, भारत का सम्मान है। इसी तरह जून के महीने में दो कैरेबियाई देश सूरीनाम और संत विन्सेंट एंड द ग्रेनादिनेस ने अपने इंडियन हेरिटेज को पूरे जोश और उत्साह के साथ सेलिब्रेट किया। सूरीनाम में हिन्दुस्तानी समुदाय हर साल 5 जून को इंडियन एराइवल डे और प्रवासी दिन के रूप में मनाता है। यहाँ तो हिन्दी के साथ ही भोजपुरी भी खूब बोली जाती है। संत विन्सेंट एंड द ग्रेनादिनेस में रहने वाले हमारे भारतीय मूल के भाई-बहनों की संख्या भी करीब छह हजार है। उन सबको अपनी विरासत पर बहुत गर्व है। एक जून को इन सबने इंडियन एराइवल डे को जिस धूम-धाम से मनाया, उससे उनकी ये भावना साफ झलकती है। दुनियाभर में भारतीय विरासत और संस्कृति का जब ऐसा विस्तार दिखता है तो हर भारतीय को गर्व होता है।

साथियो, इस महीने पूरी दुनिया ने **10वें योग दिवस** को भरपूर उत्साह और उमंग के साथ मनाया है। **मैं भी जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर में आयोजित योग कार्यक्रम में शामिल हुआ था। कश्मीर में युवाओं के साथ-साथ बहनों-बेटियों ने भी योग दिवस में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।** जैसे-जैसे योग दिवस का आयोजन आगे बढ़ रहा है, नए-नए रिकाइर्स बन रहे हैं। दुनिया-भर में योग दिवस ने कई शानदार उपलब्धियाँ हासिल की हैं। **सऊदी अरब में पहली बार एक महिला अल हनौफ साद जी ने कॉमन योग प्रोटोकॉल को लीड किया। ये पहली बार है, जब किसी सऊदी महिला ने किसी मैन योग सेशन को इन्सट्रक्ट किया हो। इजिप्ट में इस बार योग दिवस पर एक फोटो कम्पटीशन का आयोजन किया गया। नील नदी के किनारे रेड सी के बीचेस पर और पिरामिडों के सामने योग करते, लाखों लोगों की तस्वीरें बहुत लोकप्रिय हुईं। अपने मार्बल बुद्धा स्टेचू के लिए प्रसिद्ध म्याँमार का माराविजया पैगोडा कॉम्प्लेक्स दुनिया में मशहूर है। यहाँ भी 21 जून को शानदार योग सेशन का आयोजन हुआ। बहरीन में दिव्यांग बच्चों के लिए एक स्पेशल कैम्प का आयोजन किया गया। श्रीलंका में UNESCO हैरिटेज साइट के लिए मशहूर गॉल फोर्ट में एक यादगार योग सेशन हुआ। अमरीका के न्यूयॉर्क में ऑब्जरवेशन डेक पर भी लोगों ने योग किया। मार्शल आईसलैंड पर भी पहली बार बड़े स्तर पर हुए योग दिवस के कार्यक्रम में यहाँ के राष्ट्रपति जी ने भी हिस्सा लिया। भूटान के थिंपू में भी एक बड़ा योग दिवस का कार्यक्रम**

हुआ, जिसमें मेरे मित्र प्रधानमंत्री टोबगे भी शामिल हुए, यानी दुनिया के कोने-कोने में योग करते लोगों के विहंगम दृश्य हम सबने देखे। मैं योग दिवस में हिस्सा लेने वाले सभी साथियों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। मेरा आपसे एक पुराना आग्रह भी रहा है। हमें योग को केवल एक दिन का अभ्यास नहीं बनाना है। आप नियमित रूप से योग करें। इससे आप अपने जीवन में सकारात्मक बदलावों को ज़रूर महसूस करेंगे।

साथियो, भारत के कितने ही प्रोडक्ट्स हैं, जिनकी दुनिया-भर में बहुत डिमांड है और **जब हम भारत के किसी लोकल प्रोडक्ट को ग्लोबल होते देखते हैं, तो गर्व से भर जाना स्वाभाविक है। ऐसा ही एक प्रोडक्ट है अराकू कॉफ़ी। अराकू कॉफ़ी आंध्र प्रदेश के अल्लुरी सीता राम राजू ज़िले में बड़ी मात्रा में पैदा होती है। ये अपने रिच फ्लेवर और अरोमा के लिए जानी जाती है। अराकू कॉफ़ी की खेती से करीब डेढ़ लाख आदिवासी परिवार जुड़े हुए हैं। अराकू कॉफ़ी को नई ऊँचाई देने में गिरिजन कोआपरेटिव की बहुत बड़ी भूमिका रही है। इसने यहाँ के किसान भाई-बहनों को एक साथ लाने का काम किया और उन्हें अराकू कॉफ़ी की खेती के लिए प्रोत्साहन दिया। इससे इन किसानों की कमाई भी बहुत बढ़ गई है। इसका बहुत लाभ कोंडा डोरा आदिवासी समुदाय को भी मिला है। कमाई के साथ-साथ उन्हें सम्मान का जीवन भी मिल रहा है।** मुझे याद है एक बार विशाखापटनम् में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री चंद्रबाबू नायडू गारु के साथ मुझे इस कॉफ़ी का स्वाद लेने का मौका मिला था। इसके टेस्ट की तो पूछिए ही मत ! कमाल की होती है ये कॉफ़ी ! अराकू कॉफ़ी को कई ग्लोबल अवाइर्स मिले हैं। दिल्ली में हुए G-20 सम्मिट में भी कॉफ़ी छाई हुई थी। आपको जब भी अवसर मिले, आप भी अराकू कॉफ़ी का आनंद ज़रूर लें।

लोकल से ग्लोबल तक

विश्व मंच पर भारतीय उत्पाद

साथियो, लोकल प्रोडक्ट्स को ग्लोबल बनाने में हमारे जम्मू-कश्मीर के लोग भी पीछे नहीं हैं। पिछले महीने जम्मू-कश्मीर ने जो कर दिखाया है, वो देशभर के लोगों के लिए भी एक मिसाल है। यहाँ के पुलवामा से स्नो पीज़ की पहली खेप लंदन भेजी गई। कुछ लोगों को ये आइडिया सूझा कि कश्मीर में उगने वाली एक्ज़ोटिक वेजिटेबल्स को क्यों ना दुनिया के नक्शे पर लाया जाए.. बस फिर क्या था। चकूरा गाँव के अब्दुल राशीद मीर जी इसके लिए सबसे पहले आगे आए। उन्होंने गाँव के अन्य किसानों की ज़मीन को एक साथ मिलाकर स्नो पीज़ उगाने का काम शुरू किया और देखते-ही-देखते स्नो पीज़ कश्मीर से लंदन तक पहुँचने लगी। इस सफलता ने जम्मू-कश्मीर के लोगों की समृद्धि के लिए नए द्वार खोले हैं। हमारे देश में ऐसे यूनिक प्रोडक्ट्स की कमी नहीं है। आप ऐसे प्रोडक्ट्स को #myproductsmypride के साथ जरूर शेयर करें। मैं इस विषय पर आने वाले 'मन की बात' में भी चर्चा करूँगा।

मम प्रिया: देशवासिन:

अद्य अहं किञ्चित् चर्चा संस्कृत भाषायां आरभे।

आप सोच रहे होंगे कि 'मन की बात' में अचानक संस्कृत में क्यों बोल रहा हूँ ? इसकी वजह है, आज संस्कृत से जुड़ा एक खास अवसर! आज **30 जून को आकाशवाणी का संस्कृत बुलेटिन अपने प्रसारण के 50 साल पूरे कर रहा है। 50 वर्षों से लगातार इस बुलेटिन ने कितने ही लोगों को संस्कृत से जोड़े रखा है।** मैं ऑल इंडिया रेडियो परिवार को बधाई देता हूँ।

साथियो, संस्कृत की प्राचीन भारतीय ज्ञान और विज्ञान की प्रगति में बड़ी भूमिका रही है। आज के समय की माँग है कि हम संस्कृत को सम्मान भी दें और उसे अपने दैनिक जीवन से भी जोड़ें। आजकल ऐसा ही एक प्रयास बेंगलुरु में कई और लोग कर रहे हैं। **बेंगलुरु में एक पार्क है– कब्बन पार्क! इस पार्क में यहाँ के लोगों ने एक नई परम्परा शुरू की है। यहाँ हफ़्ते में एक दिन, हर रविवार बच्चे, युवा और बुजुर्ग आपस में संस्कृत में बात करते हैं। इतना ही नहीं, यहाँ वाद-विवाद के कई सेशन भी संस्कृत में ही आयोजित किए जाते हैं। इनकी इस पहल का नाम है– संस्कृत वीकेंड ! इसकी शुरुआत एक वेबसाइट के ज़रिए समष्टि गुब्बी जी ने की है। कुछ दिनों पहले ही शुरू हुआ ये प्रयास बेंगलुरुवासियों के बीच देखते ही देखते काफी लोकप्रिय हो गया है।** अगर हम सब इस तरह के प्रयास से जुड़ें तो हमें विश्व की इतनी प्राचीन और वैज्ञानिक भाषा से बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' के इस एपिसोड में आपसे जुड़ना बहुत अच्छा रहा। अब ये सिलसिला फिर पहले की तरह चलता रहेगा। अब से एक सप्ताह बाद पवित्र **रथ यात्रा की शुरुआत होने जा रही है। मेरी कामना है कि महाप्रभु जगन्नाथ की कृपा सभी देशवासियों पर सदैव बनी रहे। अमरनाथ यात्रा भी शुरू हो चुकी है और अगले दस दिनों में पंढरपुर वारी भी शुरू होने वाली है। मैं इन यात्राओं में शामिल होने वाले सभी श्रद्धालुओं को शुभकामनाएँ देता हूँ। आगे कच्छी नववर्ष–आषाढ़ी बीज का त्योहार भी है। इन सभी पर्व-त्योहारों के लिए भी आप सभी को ढेर सारी शुभकामनाएँ।** मुझे विश्वास है कि पॉजिटिविटी से जुड़े जनभागीदारी के ऐसे प्रयासों को आप मेरे साथ अवश्य शेयर करते रहेंगे। मैं अगले महीने आपके साथ फिर से जुड़ने की प्रतीक्षा कर रहा हूँ। तब-तक आप अपना भी, अपने परिवार का ध्यान रखिए। बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

'मन की बात' सुनने के लिए QR कोड स्कैन करें।

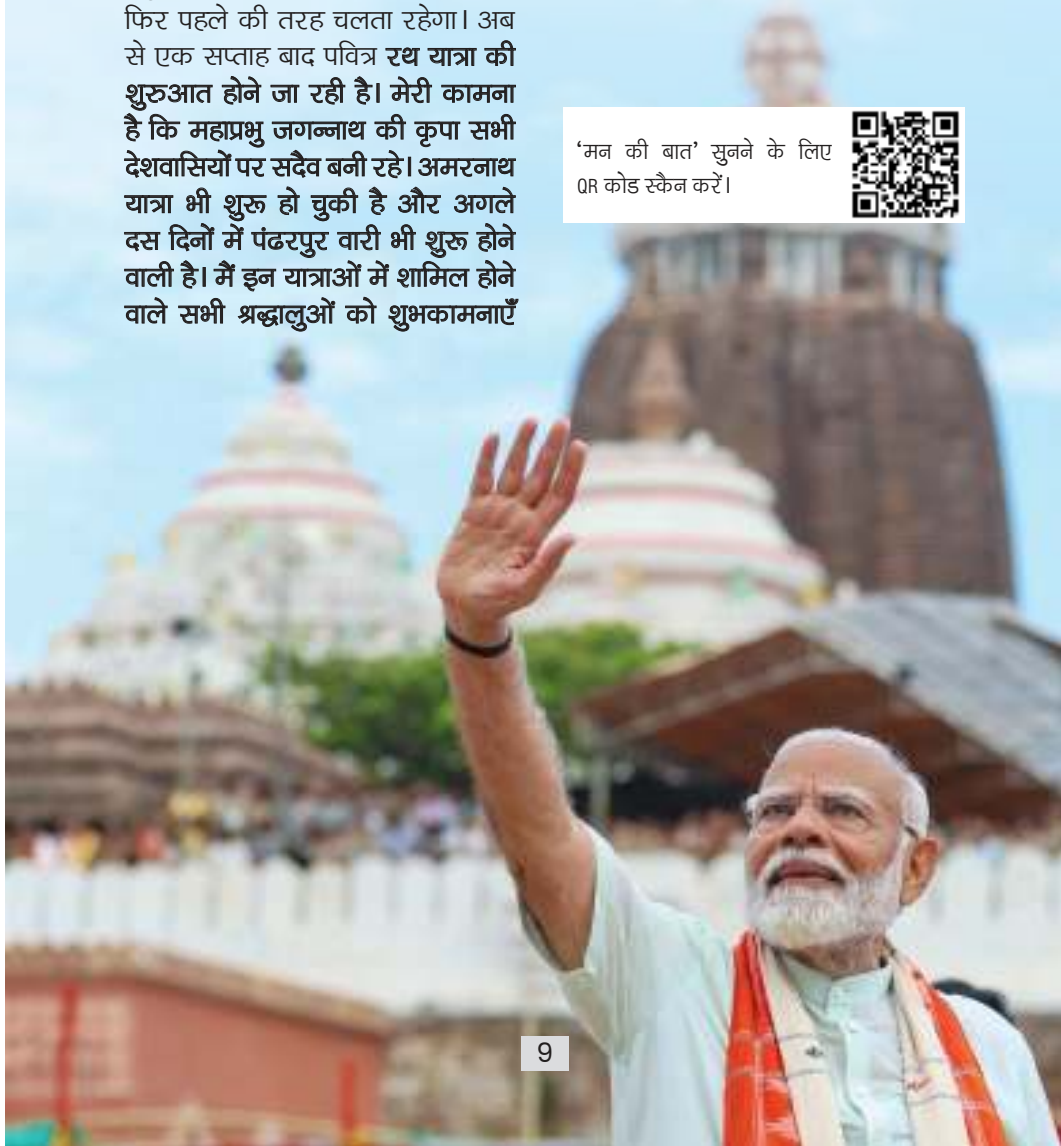

मन की बात

प्रधानमंत्री द्वारा विशेष उल्लेख

भारत में 18वीं लोकसभा चुनाव

लोकतंत्र का महापर्व

“2024 का चुनाव, दुनिया का सबसे बड़ा चुनाव था। दुनिया के किसी भी देश में इतना बड़ा चुनाव कभी नहीं हुआ, जिसमें 65 करोड़ लोगों ने वोट डाले हैं। मैं चुनाव आयोग और मतदान की प्रक्रिया से जुड़े हर व्यक्ति को इसके लिए बधाई देता हूँ।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत में 18वीं लोकसभा के चुनाव सम्पन्न हुए। इसे पूरे विश्व में सबसे बड़ी लोकतांत्रिक प्रक्रिया होने का गौरव हासिल है। 543 संसदीय क्षेत्रों में 65 करोड़ नागरिकों ने अपने मताधिकार का प्रयोग किया। इस चुनाव ने अपने संवैधानिक मूल्यों और लोकतांत्रिक सिद्धांतों के प्रति भारत की अटूट प्रतिबद्धता की पुष्टि की।

यह विशाल संकल्प केवल संख्या को लेकर ही नहीं था। यह भारत की लोकतांत्रिक भावना का एक शक्तिशाली प्रदर्शन था, जिसने अभूतपूर्व पैमाने पर स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराने की देश की क्षमता को प्रदर्शित किया। व्यस्त शहरों से लेकर दूरदराज के गाँवों तक, मतदान केंद्र नागरिकों के कर्तव्यबोध के साथ-साथ राष्ट्रीय गौरव के केंद्र बन गए, जहाँ रिकॉर्ड 65.79 प्रतिशत मतदान हुआ।

चुनाव की सफलता ने एक बार फिर दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र के रूप में भारत के सर्वोच्च स्थान की पुष्टि की है। भारत का सर्वोच्च स्थान न केवल जनसंख्या के कारण है, बल्कि इसके व्यवहार से भी इसकी पुष्टि हुई है। इसने देश की मजबूत निर्वाचन प्रणाली को

उजागर किया है, जो इतने विशाल और विविधतापूर्ण मतदाताओं के लिए साजो-सामान से जुड़ी चुनौतियों का प्रबंधन करने में सक्षम है।

भारत निर्वाचन आयोग ने अपने प्रयासों को आगे बढ़ाया। उसने यह सुनिश्चित करने के लिए कई अभिनव पहलों को लागू किया कि कोई भी मतदाता पीछे न छूटे। यह आयोग की दक्षता, समावेशिता और पारदर्शिता के संदर्भ में उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। 2024 के आम चुनाव ने 85 वर्ष या उससे अधिक आयु के नागरिकों या 40 प्रतिशत बेंचमार्क विकलांगता वाले लोगों के लिए पूरे भारत में घर से मतदान की शुरुआत की। यह समावेशिता के संदर्भ में एक मील का पत्थर साबित हुआ। महाराष्ट्र में, भारत निर्वाचन आयोग के मतदान दलों ने वामपंथी उग्रवाद से प्रभावित क्षेत्र गढ़चिरौली ज़िले के सिरोंचा शहर में दो बुजुर्ग मतदाताओं को घर से मतदान की सुविधा प्रदान करने के लिए 107 किलोमीटर की यात्रा की। इस पहल ने पात्र मतदाताओं को डाक मतपत्र के माध्यम से अपने घरों से ही मतदान करने की सुविधा प्रदान की। इससे पारदर्शिता और सुरक्षा बनाए रखते हुए उनकी भागीदारी सुनिश्चित हुई।

भारत निर्वाचन आयोग के ‘सक्षम’ ऐप ने दिव्यांगजनों के लिए व्हीलचेयर सहायता, पिक-एंड-ड्रॉप सुविधाएँ और मतदान केंद्रों पर स्वयंसेवी सहायता जैसी आवश्यक सेवाएँ प्रदान करके उनकी पहुँच को काफी हद तक बढ़ाया। निर्वाचन आयोग की इन पहलों का महत्त्वपूर्ण उद्देश्य यह सुनिश्चित करना था कि दिव्यांग मतदाता भी चुनावी प्रक्रिया में पूरी तरह से अपनी भागीदारी दर्ज़ करा सकें।

निर्वाचन से जुड़ी शिकायतों के समाधान में cVigil प्लेटफॉर्म एक गेम-

चेंजर साबित हुआ। 100 मिनट के भीतर 87 प्रतिशत शिकायतों के प्रभावकारी समाधान के साथ, इस डिजिटल पहल ने अभियान के दौरान व्यवधानों को कम किया और नागरिकों की समस्याओं का शीघ्र निपटारा किया। इससे चुनावों के सुचारू संचालन में महत्त्वपूर्ण योगदान मिला।

इस चुनाव का एक उल्लेखनीय आकर्षण महिला मतदाताओं की वृद्धि थी। पाँचवें और छठे चरण में महिलाओं ने न केवल पुरुषों के बराबर, बल्कि उससे भी अधिक मतदान किया। इससे राजनीतिक परिदृश्य में एक ऐतिहासिक बदलाव की शुरुआत हुई है। भारत निर्वाचन आयोग के अभिनव दृष्टिकोण में उत्तराखंड, कर्नाटक और ओडिशा जैसे राज्यों में विशेष महिला-नेतृत्व वाले सखी बूथों की स्थापना शामिल थी। इन्हें महिला मतदाताओं को सशक्त और प्रोत्साहित करने के लिए डिज़ाइन किया गया था। इस तरह की पहल ने न केवल महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाने में मदद की, बल्कि अधिक समावेशी और लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व प्रक्रिया का मार्ग भी प्रशस्त किया।

हाल ही में हुए लोकसभा चुनावों के दौरान जम्मू-कश्मीर ने 35 वर्षों में अपना सबसे अधिक मतदान दर्ज किया। पूरे केंद्रशासित प्रदेश में 58.46 प्रतिशत मतदान हुआ। 18वीं लोकसभा के अपने पहले सम्बोधन में राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु ने इस उल्लेखनीय भागीदारी की सराहना की और इसे क्षेत्र की लोकतांत्रिक भावना का प्रमाण बताया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अपने 110वें 'मन की बात' में 'मेरा पहला वोट – देश के लिए' का आह्वान किया था। उनका यह आह्वान पहली बार मतदान करने वाले मतदाताओं के बीच गहराई से अनुगुंजित हुआ। 28 फरवरी, 2024 से 14 मार्च, 2024 तक जागरूकता अभियान में बड़े पैमाने पर भागीदारी देखी गई। युवाओं ने मतदान करने का संकल्प लिया और दूसरों को भी इसमें शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

सात चरणों में निर्वाचन प्रक्रिया का निर्बाध संचालन न केवल प्रशासनिक क्षमता का प्रतिबिम्ब है, बल्कि निर्वाचन आयोग और मतदान कर्मियों, कानून प्रवर्तन एजेंसियों, सुरक्षा और अर्धसैनिक बलों, स्वयंसेवकों, भारतीय रेल और वायुसेना सहित कई हितधारकों के समर्पण और निष्ठा को भी दर्शाता है। सात चरणों में उन्होंने सुनिश्चित किया कि हर मतदान केंद्र तैयार रहे, हर मतपत्र सुरक्षित रहे और हर नागरिक को मतदान करने का अधिकार मिले।

2024 के लोकसभा चुनाव भारत की जीवंत लोकतांत्रिक भावना का प्रमाण हैं। मतदान में अभूतपूर्व भागीदारी और सभी पात्र मतदाताओं को शामिल करने के महत्त्वपूर्ण प्रयासों के साथ इस चुनाव ने लोकतंत्र के प्रति देश की प्रतिबद्धता की पुष्टि की और इसके लोकतांत्रिक संस्थानों की ताकत को भी प्रदर्शित किया।

#मेरा_पहला_वोट_देश_के_लिए

पहली बार का मतदाता-मतदान का सम्मान बढ़ाता

प्रक्रिया रोमांचक थी, लेकिन मैं थोड़ी विचलित थी। जब हम मतदान केंद्र पर पहुँचे तो पुलिस मित्रवत् थी और उन्होंने हमारी मदद की, जिससे चीजें आसान हो गईं।

-ई वेन्नेला, हैदराबाद, तेलंगाना

26 अप्रैल, 2024 को मैंने पहली बार वोट डालकर लोकतंत्र के उत्सव में भाग लिया। मैं प्रत्येक भारतीय से अनुरोध करूँगा कि वे देश की समृद्धि के लिए अपने अधिकार का प्रयोग करें। मेरा वोट, मेरा अधिकार।

-सार्थक भारद्वाज, मेरठ, उत्तर प्रदेश

अपने देश के लिए पहली बार वोट देने के बाद मुझे बेहद खुशी हुई। मुझे लगा कि यह बहुत मुश्किल काम होगा, लेकिन जब मैं मतदान केंद्र पर पहुँचा तो यह आसान काम लगा। मैं हर नागरिक से वोट देने का आग्रह करता हूँ, क्योंकि यह न केवल हमारा अधिकार है, बल्कि हमारा कर्तव्य भी है।

आशुतोष कुमार, खूँटी, झारखंड

मैं बहुत उत्साहित, गौरवान्वित और जिम्मेदार महसूस कर रहा था कि आखिरकार मैं चुनावी प्रक्रिया में अपना वोट डालने के योग्य हो गया हूँ। मैं बहुत आशावादी था कि भले ही मेरा एक वोट बड़े चुनावी परिदृश्य में महत्त्वहीन लग सकता है, लेकिन कम-से-कम मैं राष्ट्र निर्माण की प्रक्रिया में भाग तो लूँगा। जब मैं मतदान केंद्र पर पहुँचा तो कर्मचारियों का व्यवहार बहुत अच्छा था और मतदान प्रक्रिया बहुत सुचारू रूप से चली। 15 मिनट के भीतर, मैंने अपना वोट डाल दिया।

-साहिल राणा, डोडा, जम्मू और कश्मीर

माटी प्रेम और अदम्य साहस की मिसाल

सिद्धो-कान्हू

"मेरे प्यारे देशवासियो, 30 जून को हमारे आदिवासी भाई-बहन 'हूल दिवस' के रूप में मनाते हैं। यह दिन वीर सिद्धो-कान्हू के अदम्य साहस से जुड़ा है, जिन्होंने विदेशी शासकों के अत्याचार का पुरजोर विरोध किया था। वीर सिद्धो-कान्हू ने हजारों संथाली साथियों को एकजुट करके अंग्रेजों का जी-जान से मुकाबला किया। इस संघर्ष में अद्भुत वीरता दिखाते हुए वीर सिद्धो और कान्हू शहीद हो गए। झारखंड की भूमि के इन अमर सपूतों का बलिदान आज भी देशवासियों को प्रेरित करता है।"

-प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी

सिद्धो मुर्मु और कान्हू मुर्मु देश के वे वीर योद्धा थे, जिन्होंने अपनी माटी के सम्मान के लिए अपना जीवन न्योछावर कर दिया। इन वीर योद्धाओं की शहादत की याद में 30 जून को पूरे देश में हूल दिवस मनाया जाता है। इस दिन उनकी शौर्य गाथा और बलिदान को याद किया जाता है। संथाली भाषा में 'हूल' का अर्थ 'क्रांति' होता है और यह दिन भी अंग्रेजों के खिलाफ़ हुई एक जनक्रांति के तौर पर ही याद किया जाता है। यह क्रांति देश के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम (1857) से भी दो साल पहले यानी 1855 में हुई थी।

1855-1856 में हुए संथाल विद्रोह के नायकों की इस जोड़ी ने ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता और भ्रष्ट जमींदारी व्यवस्था के खिलाफ़ वर्तमान झारखंड और बंगाल (पुरुलिया, बीरभूम और बाँकुरा) में जंग छेड़ दी थी। 30 जून, 1855 को सिद्धो-कान्हू भाइयों ने अंग्रेजों के विरुद्ध डटकर खड़े चाँद-भैरव जनजाति बंधुओं के साथ मिलकर लगभग 10,000 संथालों को संगठित किया और ब्रिटिश हुकूमत से लोहा लेने के लिए तैयार हो गए।

1856 तक चले इस विद्रोह को दबाने में अंग्रेजी सेना को कड़ी मशक्कत करनी पड़ी। कुछ भेदियों की वजह से कान्हू को गिरफ्तार कर लिया गया और कुछ ही दिनों बाद सिद्धो भी पकड़े गए। इन दोनों भाइयों को भोगनाडीह गाँव में ही फाँसी की सजा दे दी गई। इस प्रकार देश को गुलामी से आज़ादी दिलाने के लिए सिद्धो और कान्हू शहीद हो गए।

झारखंड के 400 गाँवों के 50,000 से अधिक आदिवासियों ने ब्रिटिश शासन से डटकर मुकाबला किया। स्वतंत्रता संग्राम के पहले सैन्य विद्रोह से भी पहले घटी इस घटना में 20,000 से ज्यादा लोग शहीद हुए, लेकिन इनकी शहादत बेकार नहीं गई। इनके साहस ने अंग्रेजों को यह बता दिया कि भारतीयों के साहस और जोश के सामने कोई भी सैन्यबल और हथियार कमजोर पड़ सकते हैं। आज भी झारखंड, उड़ीसा और पश्चिम बंगाल के गाँवों में इनकी बहादुरी की कहानियाँ सुनाई जाती हैं। आज़ादी के अमृत महोत्सव के दौरान भी गुमनाम आदिवासी योद्धाओं को याद करने के क्रम में सिद्धो और कान्हू के सम्मान में कई कार्यक्रम आयोजित किए गए थे। ये तो तय है कि जब-जब वीरता, देशप्रेम और साहस पर चर्चा होगी, भारत माता के इन वीर सपूतों का नाम बड़े गर्व और सम्मान के साथ लिया जाएगा।

एक पेड़ माँ के नाम

भारत सदा से प्रकृति प्रेमी देश रहा है। भारत में पर्यावरण पर सदैव प्राथमिकता से विचार होता रहा है। चाहे वो **Mission LiFE** के अनुसार दिनचर्या अपनाने की बात हो या फिर देश में सौर ऊर्जा उत्पादन के लिए सोलर पैनल्स का जाल बिछाने की बात हो, भारत लगातार पर्यावरण शुद्धता बढ़ाने और कार्बन उत्सर्जन न्यूनतम करने के लिए प्रयासरत है। विश्व की बड़ी अर्थव्यवस्था वाले देशों की श्रेणी में भारत का प्रति व्यक्ति कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन सबसे कम है। भारत का 'प्रति व्यक्ति उत्सर्जन' वैश्विक औसत का एक तिहाई है, जो विश्व में इस श्रेणी के सबसे कम देशों में से एक है।

केंद्र सरकार ने पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन से जुड़ी समस्याओं को और अधिक गम्भीरता से लेना शुरू कर दिया है, जिसका परिणाम है कि आज भारत समस्याओं की नहीं, समाधान की बात करता है। इसी क्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 30 जून, 2024 को 'मन की बात' कार्यक्रम के दौरान देशवासियों से 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान के बारे में बात की।

‘एक पेड़ माँ के नाम’ अभियान की शुरुआत, इसी साल विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर यानी 5 जून, 2024 को की गई थी। इस अवसर पर प्रधानमंत्री ने दिल्ली के बुद्ध जयंती पार्क में एक पीपल का पेड़ लगाया। इस अभियान का उद्देश्य देशभर में करोड़ों पेड़ लगाने के लिए अनूठा जन आन्दोलन बनाना है। इस मेगा अभियान के अंतर्गत पूरे देश में 140 करोड़ पौधे लगाए जा रहे हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने अकेले साढ़े पाँच करोड़ पौधे लगाने का संकल्प लिया है। इस अभियान के माध्यम से देश का प्रत्येक नागरिक पूरे उत्साह के साथ प्रकृति के संरक्षण में जुट गया है, चाहे वो अधिकारी हो या कर्मचारी या फिर देश की आम जनता।

इनके उत्साह का ऊर्जा स्रोत है प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की जनता से यह अपील :

> “मैं देशवासियों के साथ ही दुनिया भर के लोगों से यह आग्रह करता हूँ कि वे आने वाले दिनों में अपनी माँ को श्रद्धांजलि अर्पित करने के रूप में एक पेड़ ज़रूर लगाएँ और #Plant4Mother या #एक_पेड़_माँ_के_नाम का उपयोग करते हुए अपनी एक तस्वीर साझा करें।”

परिवर्तन के बीज बो रहा 'एक पेड़ माँ के नाम'

डॉ. शिव कुमार शर्मा

अखिल भारतीय संगठन मंत्री, विज्ञान भारती

आज समस्त विश्व ग्लोबल वार्मिंग की समस्या से त्राहि-त्राहि कर रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं तथा विश्व के तापमान में अभूतपूर्व वृद्धि देखने को मिली है। महत्त्वपूर्ण शोध पत्र ये बताते हैं कि वर्ष 2050 से वर्ष 2100 तक 100 से लेकर 180 दिन की भीषण गर्मी भारत को झेलनी पड़ सकती है। इसी वर्ष 2024 में भारत के कई शहरों का तापमान 51^0C से ऊपर देखा गया। साउथ अफ्रीका के केपटाउन को दुनिया का पहला जलविहीन शहर घोषित किया जा चुका है। जब पर्यावरण वैज्ञानिकों से इन समस्याओं का समाधान पूछा जाता है तो सबकी एक राय होती है, भूमि पर अधिक-से-अधिक मात्रा में पेड़ लगाना।

आज भौतिक विकास एवं औद्योगिकीकरण को बढ़ावा देने के लिए अधिक मात्रा में वृक्ष काटे जा रहे हैं। हम जानते हैं कि वृक्ष पर्यावरण की रक्षा के लिए ज़रूरी हैं। ये प्राकृतिक वायु शोधक के रूप में कार्य करते हैं, कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं और ऑक्सीजन छोड़ते हैं। वन, जो पृथ्वी पर भूमि के लगभग 31 प्रतिशत क्षेत्र पर फैले हुए हैं, पृथ्वी के पारिस्थितिक संतुलन को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पेड़ों की जड़ें मिट्टी में पानी को संचित करती हैं और भूजल स्तर को बनाए रखती हैं तथा मिट्टी के अपरदन को रोकती हैं। पेड़ वायु में उपलब्ध धूलकणों को थाम लेते हैं तथा मानव मन पर भी सकारात्मक प्रभाव डालते हैं। ये वृक्ष जलवायु परिवर्तन से निपटने में भी सहायक हैं। संयुक्त राष्ट्र के खाद्य और कृषि संगठन (FAO) के अनुसार, वन प्रति वर्ष लगभग 2.6 बिलियन टन कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, जो जीवाश्म ईंधन जलाने से उत्सर्जित कार्बन डाइऑक्साइड का एक तिहाई है।

तीसरी बार प्रधानमंत्री पद की शपथ लेने के बाद श्री नरेन्द्र मोदी ने 30 जून, 2024 को पहली बार 'मन की बात' रेडियो कार्यक्रम के माध्यम से देश को सम्बोधित किया। उन्होंने कहा, "हर माँ अपने बच्चे पर हर स्नेह लुटाती है। जन्मदात्री माँ का ये प्यार हम सब पर एक कर्ज की तरह होता है, जिसे कोई चुका नहीं सकता। मैं सोच रहा था, हम माँ को कुछ दे तो सकते नहीं, लेकिन, और कुछ कर सकते हैं क्या ? इसी सोच से इस वर्ष विश्व पर्यावरण दिवस पर एक विशेष अभियान शुरू किया गया है, इस अभियान का नाम है– 'एक पेड़ माँ के नाम'। मैंने भी एक पेड़ अपनी माँ के नाम लगाया है। मैंने सभी देशवासियों से, दुनिया के सभी देशों के लोगों से ये अपील की है कि अपनी माँ के साथ मिलकर, या उनके नाम पर, एक पेड़ ज़रूर लगाएँ।"

वृक्ष मानव संस्कृति और इतिहास से भी गहराई से जुड़े हुए हैं। प्राचीन सभ्यताओं में वृक्षों को ज्ञान, शक्ति और धैर्य का प्रतीक माना जाता था। उदाहरण के लिए प्राचीन यूनानियों ने जैतून के वृक्ष को एथेना, ज्ञान की देवी के रूप में पवित्र माना। जैतून का वृक्ष शांति और समृद्धि का प्रतीक था और प्राचीन ग्रीस के आर्थिक और सांस्कृतिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता था। आज भी वृक्ष सांस्कृतिक प्रथाओं की निरन्तरता के प्रतीक हैं। वृक्षों का मानव की धार्मिक मान्यता एवं आस्था से भी गहरा सम्बंध है। हिन्दू धर्म में पीपल के वृक्ष को पवित्र माना जाता है और इसके बारे में गीता में भी उल्लेख मिलता है। बौद्ध धर्म में जिस बोधि वृक्ष के नीचे सिद्धार्थ को ज्ञान प्राप्त हुआ, वह बौद्ध धर्म के सबसे पूजनीय प्रतीकों में से एक है। बोधि वृक्ष ज्ञान, करुणा और आत्मज्ञान का प्रतीक है। इन वृक्षों के महत्त्व को देखते हुए संस्कृत श्लोकों में लिखा गया कि

वायूनां शोधकाः वृक्षाः
रोगाणामपहारकाः।
तस्माद् रोपणमेतेषां रक्षणं च
हितावहम्।।

अर्थात ये वृक्ष वायु के शोधक तथा रोगों के हर्ता हैं। इनका रक्षण ही समस्त भौतिक समस्याओं का निदान है। ऐसा भी कहा गया है कि

अश्वत्थमेकम् पिचुमन्दमेकम्
न्यग्रोधमेकम् दश चिञ्चिणीकान्।
कपित्थबिल्वाऽऽमलकत्रयञ्च
पञ्चाऽऽम्रमुप्त्वा नरकन्न पश्येत्।।

अर्थात कम-से-कम एक पीपल, एक नीम, एक वट, दस इमली, तीन-तीन कैथ, आँवला, विल्व एवं पाँच आम के वृक्ष अपने जीवन काल में लगाना चाहिए।

वृक्षारोपण के महत्त्व को देखते हुए देश के कई संस्थान निरंतर इस क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं, जिसमें विज्ञान भारती भी प्रमुख है। विज्ञान भारती विज्ञान के विविध आयामों तथा भारतीय विज्ञान की प्रतिस्थापना, उन्नयन और प्रसार हेतु निरंतर क्रियाशील है, साथ ही पर्यावरण संरक्षण की दिशा में भी सतत् प्रयासरत है।

चामी मुर्मु
पद्मश्री, पर्यावरणविद्

वृक्षारोपण का महत्त्व

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 5 जून, 2024 को विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान का शुभारम्भ किया। यह बहुत अच्छा कदम है। इस पहल के तहत अगर हम सभी नागरिक अपनी माँ के नाम से कम-से-कम एक पेड़ लगाते हैं तो हमारे देश और समाज के लिए तथा हमारे जीवन के लिए यह बहुत ही नेक कार्य होगा। इस अभियान में हम सभी नागरिक सहभागिता दिखाते हुए पेड़ लगाएँ तो बहुत अच्छा होगा।

मैं अभी तक लगभग तीस लाख पौधे लगा चुकी हूँ। इसकी शुरूआत भी काफी रोचक ढंग से हुई। हमारे आस-पास लकड़ी की बहुत कमी थी, हम लोग दैनिक उपयोग के लिए कोयला जलाते थे, पुआल (धान, गेहूँ, जौ, राई जैसी फसलों के डंठल) जलाते थे। हमारे क्षेत्र में पर्यावरण की स्थिति बहुत दयनीय थी। इस क्षेत्र में लकड़ी का बहुत उपयोग किया जाता है जैसे खटिया (चारपाई), कुदाल आदि बनाने में, लेकिन यहाँ लकड़ी की बहुत कमी थी और भूमि बंजर थी। हम लोगों ने विचार किया कि महिलाओं का एक समूह बनाकर पेड़ लगाने का काम शुरू किया जाए। इस प्रकार से हम लोगों ने अपने क्षेत्र में पर्यावरण सुधार के लिए पौधारोपण का काम शुरू किया और तब से हम लोग इस दिशा में लगातार काम कर रहे हैं।

कई बार ऐसा देखने को मिलता है कि लोग किसी अभियान के तहत या स्वेच्छा से पौधा तो लगा देते हैं, लेकिन उसकी देखभाल नहीं हो पाती। इसका प्रमुख कारण है– दृढ़ इच्छा शक्ति की कमी। हम लोगों को काम करने की इच्छा है। इसीलिए हम जहाँ भी पौधे लगाते हैं, तीन साल तक उसकी देख-रेख करते हैं। ग्राम वन समिति का भी गठन किया है, जिसके सहयोग से पौधों की तीन साल तक देख-रेख की जाती है। हमारे द्वारा लगाए गए पौधों में से 90 प्रतिशत सुरक्षित हैं।

जब मैंने वृक्षारोपण की शुरूआत की, तब मुझे पौधों की देख-रेख के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती थी, लेकिन मैं लगातार सीखती रही। अब-जब मैं इन सब कामों को सीख गई हूँ, तब आज बहुत सुकून मिलता है, अच्छा लगता है। पेड़-पौधे ही मेरा परिवार हैं और उन्हीं के साथ मैं अपना जीवन व्यतीत कर रही हूँ।

कई पेड़ जमीन में पानी की नमी को बनाए रखते हैं और कुछ पेड़ ऐसे भी होते हैं, जो ज्यादा पानी सोखते हैं, ऐसे में पर्यावरण के लिहाज से पौधारोपण के लिए पेड़ों का चयन बहुत ज़रूरी है। कुछ पौधे हमारे क्षेत्र के लिए काफी अच्छे होते हैं, जमीन भी अच्छी रखते हैं और पानी भी ज्यादा नहीं सोखते। नीलगिरी (यूकेलिप्टस) से जमीन सूखती है और हमारे क्षेत्र में यह जहाँ-जहाँ लगे हुए हैं, उसके आस-पास का पानी सूख गया है और अन्य पौधे भी नहीं बढ़ पाए। जहाँ अच्छी जमीन है, वहाँ हम लोगों ने आम, अमरूद लगाए हैं और उसके किनारे-किनारे सांगवान, गम्हार, नीम, करंज आदि पेड़ उगाए हैं।

प्रधानमंत्री जी द्वारा शुरू किया गया 'एक पेड़ माँ के नाम' अभियान पर्यावरण के लिए बहुत मददगार साबित होगा। मुझे उम्मीद है कि यह अभियान ज़रूर सफल होगा।

पेरिस ओलम्पिक 2024

नए जोश और नई उमंग के साथ रचेंगे नया कीर्तिमान

"हम सबके मन में टोक्यो ओलम्पिक 2020 की यादें अब भी ताज़ा हैं। टोक्यो में हमारे खिलाड़ियों के प्रदर्शन ने हर भारतीय का दिल जीत लिया था। टोक्यो ओलम्पिक के बाद से ही हमारे खिलाड़ी पेरिस ओलम्पिक की तैयारियों में जी-जान से जुटे हुए थे। सभी खिलाड़ियों को मिला दें, तो इन सबने करीब नाइन हंड्रेड–नौ सौ अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में हिस्सा लिया है। ये काफी बड़ी संख्या है।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

ओलम्पिक खेल यकीनन विश्व में सबसे बड़ा और सबसे प्रतिष्ठित खेल आयोजन है। यह खेलों का सबसे बड़ा त्योहार है। 150 से भी ज़्यादा देश और वहाँ के खिलाड़ी बेसब्री से खेलों के इस महापर्व का चार सालों तक इंतजार करते हैं। हमारे देश में भी इसके प्रति एक अलग उत्साह देखने को मिलता है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी 'मन की बात' के 111वें संस्करण में आगामी पेरिस ओलम्पिक-2024 का ज़िक्र किया और उसमें हिस्सा लेने जा रहे खिलाड़ियों को शुभकामनाएँ दीं।

तीन साल पहले 2021 में भी प्रधानमंत्री और पूरा देश फूले नहीं समा रहे थे, जब देश को गौरवान्वित करने वाले हमारे खिलाड़ियों ने टोक्यो में आयोजित ओलम्पिक 2020 में देश का मान बढ़ाया था। कोविड महामारी की वजह से टोक्यो ओलम्पिक भले ही देरी से शुरू हुआ, लेकिन इसके प्रति पूरे विश्व में जोश और उत्साह में कमी नहीं आई। भारतीय खिलाड़ियों ने भी देश को निराश नहीं किया और एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदक लेकर घर आए।

कोविड महामारी से उपजी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद टोक्यो 2020 ओलम्पिक में हमारे देश के युवाओं ने इतिहास रचा और 120 सालों के इतिहास में सबसे अधिक सात पदक घर लेकर आए। इसके साथ ही पैरालम्पिक 2020

में भी हमारा प्रदर्शन अभूतपूर्व रहा और हमने सारे रिकॉर्ड तोड़ते हुए सबसे अधिक 19 पदक जीते, जिनमें 5 स्वर्ण पदक शामिल हैं।

पिछले दो ओलम्पिक में भारत की दावेदारी काफी मज़बूत दिखाई दी है और यह इस बात का सबूत है कि पिछले दो दशकों में भारत में 'स्पोर्ट्स कल्चर' को काफी बढ़ावा मिला है।

इसी उद्देश्य से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सरकार ने ओलम्पिक और पैरालम्पिक में भारत के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के लिए सितम्बर, 2014 में टारगेट ओलम्पिक पोडियम स्कीम (TOPS) की शुरुआत की थी। TOPS के प्रबंधन के लिए एक तकनीकी सहायता टीम स्थापित करने के लिए अप्रैल, 2018 में इसे नया रूप दिया गया। यह योजना ओलम्पिक खेलों और पैरालम्पिक खेलों में हिस्सा लेने वाले सम्भावित एथलीट्स को विदेशी प्रशिक्षण,

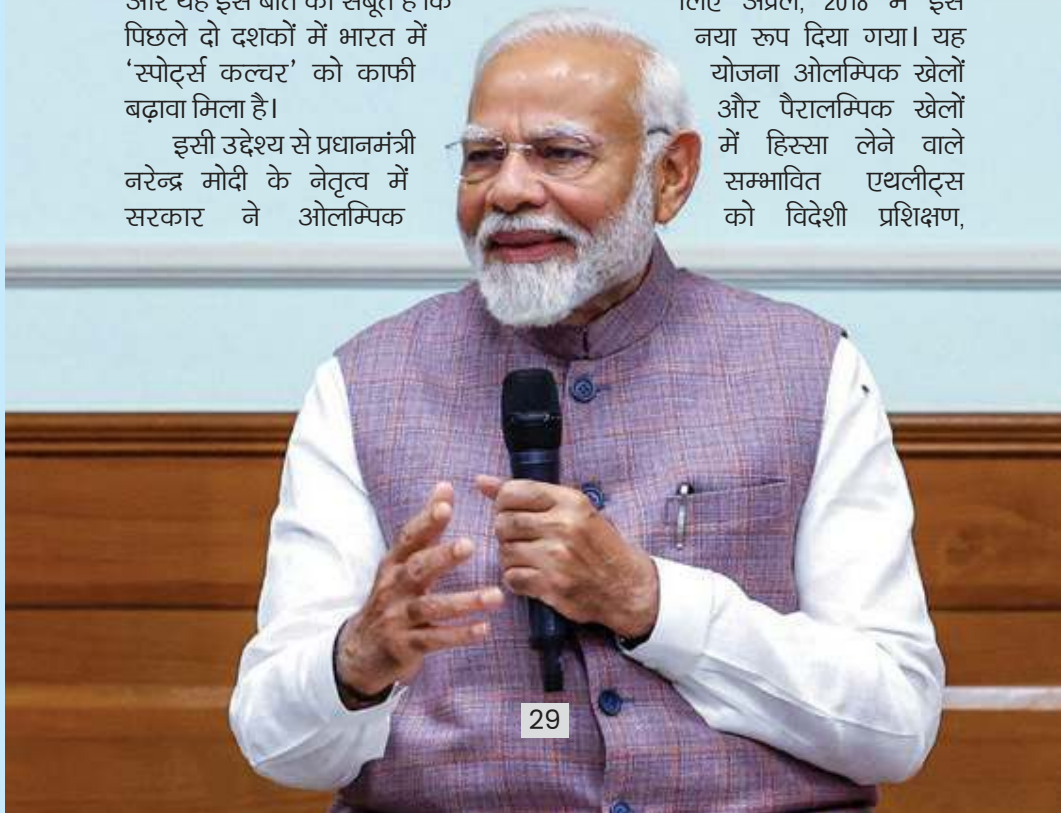

अंतरराष्ट्रीय प्रतियोगिताओं के लिए उपकरण और कोचिंग शिविर के अलावा प्रत्येक एथलीट के लिए 50,000 रुपए मासिक वजीफे सहित सभी आवश्यक सहायता प्रदान कर रही है।

इस योजना के फलस्वरूप TOPS प्रायोजित एथलीट्स का प्रदर्शन 2016 रियो ओलम्पिक, 2018 राष्ट्रमंडल खेलों, 2020 टोक्यो ओलम्पिक और 2022 राष्ट्रमंडल खेलों में बेहतरीन रहा। पी.वी. सिंधु, नीरज चोपड़ा, सुहास यतिराज सहित कई एथलीट्स ने इस योजना की मदद से अंतरराष्ट्रीय मंच पर देश की शान बढ़ाई। उनके भारत आने के बाद खुद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभी एथलीट्स से मिलकर उन्हें बधाई दी और साबित किया कि खेल केंद्र सरकार की शीर्ष प्राथमिकताओं में से एक है।

हाल की बात करें तो CWG 2022 में पदक जीतने वाले 70 एथलीट्स में से 47 को इस योजना के तहत समर्थन दिया गया था। इसके अलावा पैरालम्पिक 2020 में भी 19 पदक जीतने वाले 17 खिलाड़ियों में से 15 इस योजना का हिस्सा रहे थे और सरकार द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं का लाभ उठा रहे थे। पेरिस ओलम्पिक के लिए जा रहे दल में भी दीपिका कुमारी, अनु रानी, किशोर जेना समेत कई TOPS समर्थित एथलीट शामिल हैं।

पूरे देश को इस बार हमारे खिलाड़ियों से काफी उम्मीदें हैं। उन्हें पूरा भरोसा है कि इस ओलम्पिक में हम अपना पिछला रिकॉर्ड ज़रूर तोड़ेंगे और एक बार फिर तिरंगा अंतरराष्ट्रीय मंच पर शान से लहराएगा। प्रधानमंत्री सहित पूरा देश खेलों के इस महाकुम्भ के लिए बेहद रोमांचित है।

आंध्रप्रदेश की बेटी ने रचा इतिहास

साथियो, पेरिस ओलम्पिक में आपको कुछ चीजें पहली बार देखने को मिलेंगी। शूटिंग में हमारे खिलाड़ियों की प्रतिभा निखरकर सामने आ रही है। टेबल टेनिस में पुरुष और महिला, दोनों टीमें क्वालीफाई कर चुकी हैं। भारतीय शॉटगन टीम में हमारी शूटर बेटियाँ भी शामिल हैं। इससे आप ये अनुमान लगा सकते हैं कि इस बार हमें खेलों में अलग लेवल का रोमांच नज़र आएगा।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' के सम्बोधन में)

हर बार की तरह इस बार भी भारतीय दल से करोड़ों देशवासियों की उम्मीदें जुड़ी हैं। इस बार एक तरफ जहाँ शूटिंग में 21 लोगों ने क्वालिफाई किया है, तो वहीं घुड़सवारी और नौकायन में भी भारतीय दमखम दिखाएँगे, लेकिन इनमें से सबसे ज्यादा उम्मीदें ज्योति याराजी पर होंगी। ज्योति याराजी आधुनिक ओलम्पिक इतिहास की 100 मीटर बाधा दौड़ में हिस्सा लेने वाली पहली भारतीय खिलाड़ी बनने जा रही हैं। याराजी ने मई में फ़िनलैंड की एक प्रतियोगिता में 12.78 सेकंड की दौड़ लगाई, जो कि 12.77 सेकंड के ऑटोमेटिक क्वालिफिकेशन समय से केवल 0.01 सेकंड कम था, लेकिन फिर भी उन्होंने अपनी रैंकिंग के दम पर पेरिस ओलम्पिक का टिकट हासिल कर ही लिया।

आंध्रप्रदेश की रहने वाली ज्योति के लिए यहाँ तक का सफ़र आसान नहीं था। उनके पिता सूर्यनारायण एक प्राइवेट सुरक्षा गार्ड के रूप में काम करते हैं और उनकी माता कुमारी एक घरेलू सहायिका हैं, लेकिन ज्योति ने जिद ठान ली थी और स्कूली दिनों में ही उन्होंने अपनी मंजिल तक पहुँचने का रास्ता बना लिया था। उनकी फिज़िकल एजुकेशन टीचर ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उनका मार्गदर्शन किया। इसके बाद उन्होंने पीछे मुड़कर नहीं देखा।

24 साल की ज्योति का अंतरराष्ट्रीय करियर शुरू हुए अभी ज्यादा समय नहीं हुआ है, लेकिन इसके बावजूद वर्तमान में 100 मीटर बाधा दौड़ में सबसे तेज़ भारतीय महिला होने की उपलब्धि उन्हीं के नाम है। ज्योति ने तब सभी को चौंका दिया था, जब उन्होंने नेशनल गेम्स 2022 में 100 मीटर की रेस में भारत की दो प्रमुख महिला धावक दुती चंद और हिमा दास को हराकर स्वर्ण पदक अपने नाम किया था। उन्होंने 11.51 सेकंड के समय के साथ नया रिकॉर्ड भी बना दिया था।

ज्योति याराजी का राष्ट्रीय रिकॉर्ड तोड़ने का सिलसिला 2022 और 2023 में भी जारी रहा। उन्होंने 2023 एशियाई एथलेटिक्स चैम्पियनशिप में स्वर्ण पदक जीतने के साथ-साथ 2023 एशियाई इंडोर चैम्पियनशिप और 2023 एशियाई खेलों में रजत पदक हासिल किया। इस ओलम्पिक में भी उनसे ऐसे ही प्रदर्शन की उम्मीद है और पूरा देश उनका उत्साह बढ़ाता रहेगा।

विश्व में भारत की विशिष्ट पहचान

भारत की संस्कृति के ताने-बाने को हजारों सालों से बुना गया है। अब इसकी पताका पूरी दुनिया में फहरा रही है। इतना ही नहीं, इसके जीवंत रंग सांस्कृतिक आदान-प्रदान के नए परिदृश्य चित्रित कर रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व में भारत एक सांस्कृतिक पुनर्जागरण का अनुभव कर रहा है। यह सांस्कृतिक पुनर्जागरण इसकी सीमाओं के भीतर और दुनिया भर में गुँजायमान हो रहा है और अपने देश की समृद्ध परम्पराओं और ज्वलंत अभिव्यक्तियों से लोगों को आकर्षित कर रहा है। जैसा कि प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' के 111वें एपिसोड में बताया कि भारत की सांस्कृतिक छाप अभूतपूर्व जोश के साथ फैल रही है। पश्चिम एशिया के दिल से लेकर कैरिबियन के तटों तक, भारतीय संस्कृति के सार को दुनिया भर में अपनाया जा रहा है और इसका जश्न भी मनाया जा रहा है। आइए डालते हैं एक नज़र।

कुवैत रेडियो पर पहला हिन्दी प्रसारण

एक अभूतपूर्व क्षण में, कुवैत रेडियो के प्रसारण में हिन्दी की जीवंतता गुँजायमान है। अरब देश में हिन्दी में प्रसारण होना भारतीय संस्कृति के संदर्भ में सचमुच एक मील का पत्थर है। 21 अप्रैल, 2024 को कुवैती सरकार ने अपने राष्ट्रीय रेडियो पर श्रोताओं के लिए अपना पहला हिन्दी रेडियो प्रसारण शुरू किया। यह भारत के साथ राजनयिक सम्बंधों के 62 साल के इतिहास में पहली बार की गई एक अनूठी पहल है। हिन्दी में रेडियो कार्यक्रम को 'नमस्ते कुवैत' कहा जाता है। कुवैत रेडियो पर हर रविवार को 30 मिनट के लिए, रात 8:30 बजे से रात 9 बजे तक (कुवैत के स्थानीय समय के अनुसार), एफएम 93.3 और एएम 96.3 पर इसे प्रसारित किया जा रहा है।

"इस कार्यक्रम का विचार इस तथ्य से आया कि आज कुवैत में भारतीय सबसे बड़ा प्रवासी समुदाय है, जो लगभग दस लाख से अधिक है। उन्हें कम्युनिटी ऑफ़ फर्स्ट प्रेफ़रेंस कहा जाता है। हमने कुवैत के सूचना मंत्रालय के समक्ष यह प्रस्ताव रखा और उन्होंने इस प्रस्ताव को बहुत ही सहजता से स्वीकार किया। दो भारतीय नागरिकों द्वारा होस्ट किया जाने वाला यह रेडियो शो भारत और कुवैत में हाल ही में हुए घटनाक्रमों पर केंद्रित है। कुवैत में बॉलीवुड फिल्में और संगीत बहुत लोकप्रिय हैं। कार्यक्रम में भारत-कुवैत के ऐतिहासिक सम्बंधों के बारे में भी कुछ अंश साझा किए जाते हैं। हिन्दी कार्यक्रम को न केवल कुवैत में रहने वाले भारतीयों द्वारा, बल्कि कुवैतियों और भारत में रहने वाले लोगों द्वारा भी व्यापक रूप से पसंद किया गया है। मुझे यकीन है कि यह दोनों देशों के बीच व्यापक सांस्कृतिक सहयोग को बढ़ावा देने में काफी मददगार साबित होगा।"

– आदर्श स्वाइका, कुवैत में भारत के राजदूत

तुर्कमेनिस्तान में टैगोर

सांस्कृतिक तौर पर श्रद्धा का एक ऐसा ही भाव तुर्कमेनिस्तान में भी देखने को मिला। तुर्कमेनिस्तान के राष्ट्रीय कवि मैग्टीमगुली पायरागी की 300वीं जयंती के उपलक्ष्य में आयोजित समारोह के हिस्से के रूप में राष्ट्रपति सर्दार बर्दीमुहमदोव ने महान गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर सहित 24 प्रसिद्ध वैश्विक कवियों की प्रतिमाओं का अनावरण किया। नोबेल पुरस्कार विजेता टैगोर को दिया गया यह सम्मान साहित्यिक प्रतिभा की गहन मान्यता है, जिन्होंने अपनी कालातीत कविताओं, उपन्यासों और गीतों के साथ राष्ट्रीय सीमाओं को पार किया है। टैगोर को 24 वैश्विक कवियों में शामिल करना भारतीय साहित्य की समृद्ध विरासत और विश्व के साहित्यिक ताने-बाने में भारत के महत्त्वपूर्ण योगदान को भी दर्शाता है।

कैरिबियन अपनी भारतीय जड़ों को अपना रहे हैं

पश्चिम में, लैटिन अमेरिकी देशों सूरीनाम और सेंट विंसेंट और ग्रेनादिनेस में भारतीय विरासत के उत्सवों को उत्साह और गर्व के साथ मनाया जाता है। सूरीनाम में हर साल 5 जून को भारतीय आगमन दिवस और प्रवासी दिवस मनाया जाता है। यह आयोजन भारतीय पूर्वजों के आगमन और देश की सांस्कृतिक विरासत में उनके अमूल्य योगदान की याद दिलाता है। सूरीनाम में भोजपुरी और हिन्दी का व्यापक उपयोग इस भौगोलिक रूप से दूर देश में भारतीय संस्कृति की स्थायी विरासत को चिह्नित करता है। इसी तरह, सेंट विंसेंट और ग्रेनादिनेस ने 1 जून, 2024 को भारतीय विरासत दिवस मनाया, जहाँ भारतीय मूल के लोगों की अधिक आबादी है। ऐसे समारोह न केवल भारतीय समुदाय की सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करते हैं, बल्कि मेजबान देशों के बहु-सांस्कृतिक ताने-बाने को भी समृद्ध करते हैं।

एस. रामजी, चार्ज डी अफ़ेयर्स, भारतीय दूतावास, सूरीनाम

“इस वर्ष सूरीनाम में भारतीयों के आगमन की 151वीं वर्षगाँठ मनाई गई। इस दिन 1873 में पहला जहाज ‘लालारूख’ पारामारिबो के तट पर उतरा था। इस वर्ष आधिकारिक कार्यक्रम पारामारिबो में बाबा एन माई स्मारक पर आयोजित किया गया। सूरीनाम के राष्ट्रपति चंद्रिका प्रसाद संतोखी भी भारतीय मूल के व्यक्ति हैं। वे अक्सर सार्वजनिक कार्यक्रमों में गर्व के साथ भोजपुरी बोलते हैं। सूरीनाम में रहने वाला भारतीय समुदाय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व की गहरी प्रशंसा करता है। भारत के भीतर विकास पर उनका ध्यान और उनका बढ़ता अंतरराष्ट्रीय प्रभाव इंडो-सूरीनाम समुदाय के साथ दृढ़ता से जुड़ता है, जिससे भविष्य के लिए आशावाद बढ़ता है। भारत के विकास पर उनका ध्यान और उनका बढ़ता अंतरराष्ट्रीय प्रभाव भारत-सूरीनाम समुदाय के साथ दृढ़ता से मेल खाता है, जो भविष्य के लिए सकारात्मक उम्मीद है।”

IYD 2024

भारत और विश्व ने कैसे मनाया योग दिवस

इस वर्ष 21 जून को मनाए गए अंतरराष्ट्रीय योग दिवस में श्रीनगर, जम्मू-कश्मीर में उल्लेखनीय भागीदारी देखी गई। 'स्वयं और समाज के लिए योग' (Yoga for Self and Society) विषय पर आयोजित इस कार्यक्रम का नेतृत्व प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किया, जिसमें क्षेत्र के युवाओं और महिलाओं की उत्साहपूर्ण भागीदारी थी। कश्मीर में यह उत्सव एक वैश्विक समारोह का हिस्सा बना, जो दुनिया भर में योग के बढ़ते महत्त्व को उजागर करता है।

इस दिन नील नदी के तट से लेकर श्रीलंका के विरासत स्थलों तक, पूरे विश्व में बड़ी संख्या में लोगों ने योग में हिस्सा लिया और इस दिन को एकता और जोश के साथ मनाया। विशेष रूप से सऊदी अरब ने अपना पहला महिला नेतृत्व वाला योग सत्र रखा, जबकि मिस्र ने लाल सागर के किनारे योग की एक फोटो प्रतियोगिता आयोजित की।

इस अनुष्ठान ने शारीरिक और मानसिक कल्याण को बढ़ावा देने वाले योग की सार्वभौमिक अपील को प्राथमिकता दी। सरकार की पहल ने योग को सफलतापूर्वक एक वैश्विक आन्दोलन बना दिया है, जिससे अंतरराष्ट्रीय सौहार्द और स्वास्थ्य चेतना की भावना को बल मिला है।

मार्शल द्वीपसमूह

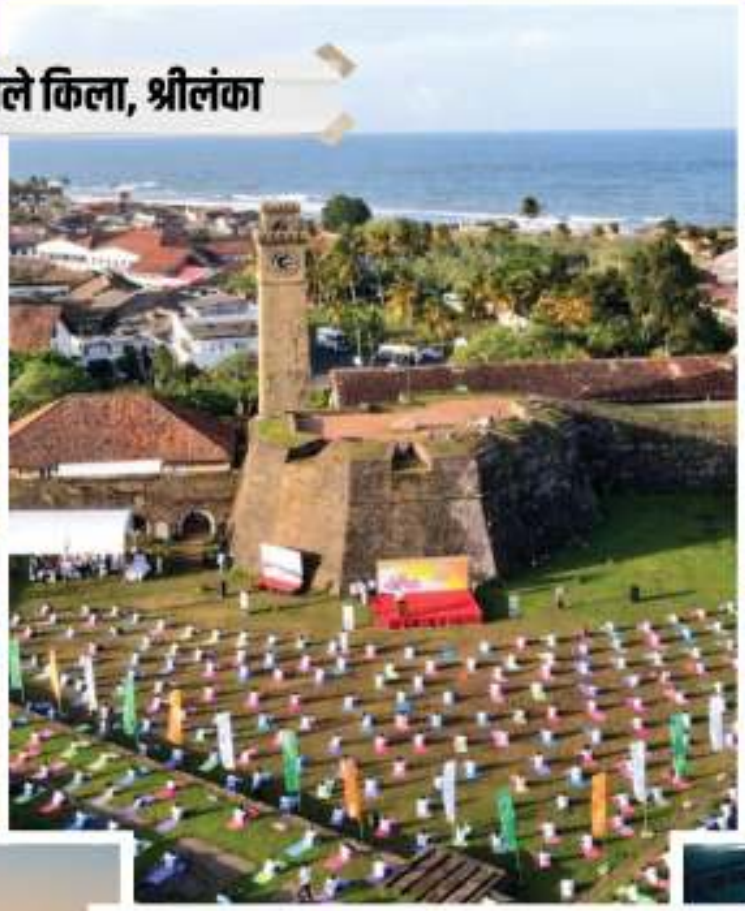

गैले किला, श्रीलंका

थिम्पू, भूटान

न्यूयार्क, अमरीका

म्याँमार

बहरीन

मेरा उत्पाद, मेरा गौरव

विकास और वैश्विक पहचान की यात्रा

“भारत के बहुत से प्रोडक्ट हैं, जिनकी दुनिया भर में बहुत डिमांड है और जब हम भारत के किसी लोकल प्रोडक्ट को ग्लोबल होते देखते हैं, तो गर्व से भर जाना स्वाभाविक है।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

अपने अनूठे उत्पादों, कुशल कारीगरों और ‘आत्मनिर्भरता’ की भावना के लिए प्रसिद्ध भारत अवसरों की भूमि है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के ‘वोकल फ़ॉर लोकल’ के मंत्र ने स्थानीय व्यवसायों को मज़बूत करने और उन्हें वैश्विक पहचान दिलाने के लिए अनुकूल वातावरण का पोषण करके इस भावना को बढ़ावा देने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। महत्त्वाकांक्षी ‘मेक इन इंडिया’ कार्यक्रम के अभिन्न अंग के रूप में इस पहल का उद्देश्य न केवल आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देना है, बल्कि विभिन्न क्षेत्रों में सतत विकास को प्रोत्साहित करना भी है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने ‘मन की बात’ के 111वें सम्बोधन में भारत की विभिन्न अनूठी पेशकश पर प्रकाश डालते हुए ‘मेरा उत्पाद, मेरा गौरव’ अभियान का आह्वान किया, जिसमें भारत की अद्वितीय सांस्कृतिक और आर्थिक सक्षमता पर ज़ोर दिया गया। केरल की प्रतिष्ठित कार्थुम्बी छतरियों से लेकर आंध्र प्रदेश की बेहतरीन अराकू कॉफी और जम्मू-कश्मीर के स्वादिष्ट स्नो पीज़ तक, भारत के उत्पादों के ज़रिए इसकी सांस्कृतिक विविधता और उद्यमशीलता की क्षमता झलकती है।

“जब माननीय प्रधानमंत्री ने मेरा नाम लिया, तो मुझे बेहद खुशी हुई। मेरा नाम लेकर प्रधानमंत्री ने जम्मू-कश्मीर और पूरे भारत के सभी छोटे किसानों को सम्मानित किया है। यह इस बात को दर्शाता है कि प्रधानमंत्री देश के छोटे और सीमांत किसानों के बारे में कितने चिंतित हैं।”

-अब्दुल रशीद मीर,
किसान, चकूरा, जम्मू और कश्मीर

प्रधानमंत्री ने बार-बार वैश्विक विनिर्माण की महाशक्ति के रूप में भारत की महत्ता की पुष्टि की है। आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने और अपनी विविध सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने में भारत की नई उपलब्धियों के साथ सरकार वैश्विक मानकों को बनाए रखने के लिए स्थानीय व्यवसायों को प्रोत्साहित करने के कई प्रयास कर रही है।

ऐसे स्वदेशी उत्पादों की लोकप्रियता रातो-रात नहीं, बल्कि वर्षों के संचित प्रयासों से आई है। ‘वोकल फ़ॉर लोकल’ के पूरक के रूप में, ‘एक ज़िला-एक उत्पाद’ (वन डिस्ट्रिक्ट, वन प्रोडक्ट, ODOP) और ‘माई हैंडलूम माई प्राइड’ जैसी पहल ने इस क्रमिक विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है।

भारत के हर ज़िले से कम-से-कम एक विशिष्ट उत्पाद का चयन, ब्रांडिंग और प्रचार करने के उद्देश्य से, ‘एक ज़िला-एक उत्पाद’ पहल क्षेत्रीय सीमाओं से परे स्थानीय उत्पादों को बढ़ावा देने के लिए अच्छी तरह से परिभाषित और कार्यनीतिक दृष्टिकोण है। इस पहल ने देश भर के 761 ज़िलों से 1,102 उत्पादों की प्रभावशाली श्रृंखला की पहचान की है। इस पहल के माध्यम से सरकार प्रत्येक उत्पाद की विशिष्ट आवश्यकताओं के साथ सहायक बुनियादी ढाँचे को रेखांकित करती है। ओडीओपी पहल खाद्य प्रसंस्करण और हस्तशिल्प क्षेत्रों में हल्दी, आँवला, मिलेट, अनाज-आधारित उत्पाद, नागा मिर्च उत्पाद, गुड़, चिकनकारी, जरी-जरदोजी का काम, हथकरघा रेशम की साड़ियाँ और सींग-हड्डी निर्मित उत्पाद, जैसे स्वदेशी और विशिष्ट उत्पादों को बढ़ावा देती है। सरकार की ऐसी पहल से प्रेरित तथा समर्थित स्थानीय उत्पादक,

निर्माता और सेवा प्रदाता अनूठे, गुणवत्ता वाले उत्पादों को प्रकाश में लाने में सफल रहे हैं।

प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीताराम राजू ज़िले की अराकू कॉफी के स्वाद और किसानों की आय बढ़ाने में इसकी भूमिका के लिए प्रशंसा की। इस 'अद्भुत' कॉफी ने ओडीओपी राष्ट्रीय पुरस्कार 2023 में स्वर्ण पदक भी जीता है।

ओडीओपी ने कृषि उपज, अनाज आधारित उत्पादों से लेकर पारम्परिक और अभिनव उत्पादों तक, मंत्रालयों, दूतावासों, स्थानीय उत्पादकों और कुशल कारीगरों के बीच उपयोगी सहयोग को बढ़ावा दिया है। बहरीन में भारतीय दूतावास ने 2 जुलाई, 2024 को एक नई ओडिशा स्टेट टूरिज्म एण्ड वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट वॉल का उद्घाटन किया। राजस्थान, कश्मीर, उत्तर प्रदेश और कर्नाटक के बाद ओडिशा बहरीन में विभिन्न भारतीय राज्यों के विशिष्ट ओडीओपी उत्पादों को प्रदर्शित करने वाला पाँचवाँ राज्य बन गया है।

इसी तरह, 'माई हैंडलूम माई प्राइड' के नारे के तहत हथकरघा और हस्तशिल्प श्रमिकों को प्रोत्साहित करने के लिए नियमित रूप से देश भर में एक्सपो आयोजित किए जाते हैं। ये, देश भर में समृद्ध स्थानीय विरासत का प्रचार करने और उसे बढ़ावा देने के लिए कई स्तरों पर किए जा रहे प्रयासों में से कुछ उदाहरण हैं।

प्रधानमंत्री ने हाल के 'मन की बात' कार्यक्रम में जम्मू-कश्मीर की जिस हालिया उपलब्धि को उजागर किया, वह पूरे देश के लोगों के लिए एक प्रेरणादायक उदाहरण है। पुलवामा से स्नो पीज़ की पहली खेप लंदन भेजना एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है, जिसने न केवल क्षेत्र से कृषि निर्यात के लिए नए दरवाजे खोले हैं, बल्कि व्यापक प्रेरणा भी दी है।

कृषि निर्यात के लिए एक और महत्त्वपूर्ण विकास में उत्तर प्रदेश, भारत के चावल की बेहतरीन सुगंधित किस्मों में से एक, 'काला नमक' चावल के रूप में प्रसिद्ध बुद्ध चावल की 20 टन खेप सिंगापुर को निर्यात करने के लिए तैयार है। काला नमक चावल के उत्पादन, प्रसंस्करण, पैकेजिंग तथा ब्रांडिंग को और बढ़ावा देने के लिए केंद्र सरकार ने इसे बस्ती, गोरखपुर, महाराजगंज और संत कबीर नगर के ओडीओपी के रूप में घोषित किया है, जिससे राज्य के किसानों को लाभ होगा और कृषि क्षेत्र में उनकी भूमिका मजबूत होगी।

भारत में स्थानीय उत्पादों और शिल्पकला की समृद्ध परम्परा है, तो आइए हम सब मिलकर 'मेरा उत्पाद, मेरा गौरव' अभियान को प्रोत्साहन दें, ताकि वैश्विक स्तर पर मजबूत और अधिक आत्मनिर्भर भारत को बढ़ावा मिले। अपने आस-पास के अनूठे उत्पादों की विरासत को #myproductsmypride के साथ साझा करें।

वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोडक्ट II एक ज़िला एक उत्पाद

कार्थुम्बी छाते
केरल के स्थानीय शिल्प का जश्न

"केरल की संस्कृति में छातों का विशेष महत्त्व है। छाते, वहाँ की कई परम्पराओं और विधि-विधान का अहम् हिस्सा होते हैं, लेकिन मैं जिस छाते की बात कर रहा हूँ, वो हैं 'कार्थुम्बी छाते' और इन्हें तैयार किया जाता है केरल के अट्टापडी में। ये रंग-बिरंगे छाते बहुत शानदार होते हैं और खासियत यह कि इन छातों को केरल की हमारी आदिवासी बहनें तैयार करती हैं।"

–प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
('मन की बात' सम्बोधन में)

केरल के आदिवासी कारीगरों द्वारा सावधानीपूर्वक तैयार किए गए कार्थुम्बी छाते, 'मेरा उत्पाद, मेरा गौरव' का जीवंत उदाहरण हैं।

कार्थुम्बी छतरियों का उत्पादन लगभग दस साल पहले केरल के पलक्कड़ ज़िले के अट्टापडी की आदिवासी महिलाओं को सशक्त बनाने के मिशन के साथ शुरू हुआ था। वट्टालक्की सहकारी कृषि सोसायटी की देखरेख में निर्मित, कार्थुम्बी छतरियाँ केरल के एक छोटे से गाँव की कला से विकसित होकर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा अपनाई जाने लगी हैं। शुरुआत में सरकारी संस्थानों और स्कूलों से मिलने वाले ऑर्डर को पूरा करने के लिए इन्हें तैयार किया जाता था, वहीं अब ये रंगीन छतरियाँ खुले बाजार और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर भी उपलब्ध हैं।

"कार्थुम्बी छाते अट्टापडी की हमारी आदिवासी बहनों द्वारा बनाई जाती हैं। मुझे लगता है कि हमारी आदिवासी बहनों की मदद के लिए हम सभी लोगों को कम-से-कम एक छाता ज़रूर खरीदना चाहिए।"

-जॉर्ज कुरियन, मत्स्य पालन, पशुपालन और डेयरी मंत्री

"मुझे यकीन है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा कार्थुम्बी छतरियों का जिक्र करने से सोसायटी के उत्पादों को अधिक लोगों तक पहुँचने में मदद मिलेगी। एक कृषि उद्यम के रूप में शुरू की गई, वट्टालक्की कोऑपरेटिव फार्मिंग सोसायटी ने अपने द्वारा किए गए विविधीकरण के कारण यह उपलब्धि हासिल की है। वट्टालक्की फार्मिंग सोसायटी 150 आदिवासी व्यक्तियों का एक समूह है, जिसमें मुख्य रूप से महिलाएँ शामिल हैं। ये एक मजबूत समुदाय के निर्माण के लिए एक साथ आए हैं। महिलाओं को अपनी आय अर्जित करने में सक्षम बनाना हमेशा से समुदायों को सामाजिक रूप पर ऊपर उठने में मदद करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। यह आदिवासी समुदाय पर भी समान रूप से लागू होता है और इसी संदर्भ में वट्टालक्की फार्मिंग सोसायटी ने महत्त्वपूर्ण सफलता प्राप्त की है।"

–डॉ. एस. चित्रा, ज़िला कलेक्टर, वट्टालक्की

"वट्टालक्की कोऑपरेटिव फार्मिंग सोसायटी, आदिवासी समुदाय की उद्यमशीलता का एक प्रमाण है और यह दर्शाता है कि सरकार के साथ-साथ अन्य प्रकार से सही समर्थन के साथ वे क्या हासिल कर सकते हैं। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा हाल ही में दिए गए महत्त्व ने हमें एक नया प्रोत्साहन दिया है, ताकि हम वट्टालक्की कोऑपरेटिव फार्मिंग सोसाइटी के कार्यों में और अधिक विविधता लाने की योजना बना सकें और बेहतरीन विज्ञापन या ब्रांडिंग रणनीतियों के साथ आ सकें।"

–डॉ. मिधुम प्रेमराज, सब कलेक्टर

अराकू कॉफ़ी का बढ़ता बाज़ार

मन की बात के 111वें सम्बोधन में, अराकू कॉफ़ी के समृद्ध स्वाद और मनमोहक सुगंध के लिए उसकी प्रशंसा की गई। आंध्र प्रदेश के अल्लूरी सीता राम राजू ज़िले में अराकू घाटी में उगाई जाने वाली अराकू कॉफ़ी ने 2019 में अपना जीआई टैग अर्जित किया। आदिवासी किसानों और सहकारी समितियों के सहयोग पर आधारित प्रयासों से उगाया गया राज्य का यह खास उत्पाद अपने उत्कृष्ट स्वाद के साथ, स्थानीय किसानों की आय को काफी हद तक बढ़ाने में सहायक है।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 1.5 लाख आदिवासी परिवारों के लिए रोजगार के अवसर पैदा करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि गिरिजन कोऑपरेटिव ने अराकू कॉफ़ी को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने में अहम भूमिका निभाई है। इसके कारण यहाँ के किसान भाई-बहन एक साथ आए और उन्हें अराकू कॉफी की खेती के लिए प्रोत्साहित किया। इस पहचान से उत्साहित **जी. सुरेश कुमार (उपाध्यक्ष, अल्लूरी सीताराम गिरिजन कोऑपरेटिव)** ने हमारी दूरदर्शन टीम से बात की।

प्रधानमंत्री ने ख़ुद अराकू कॉफ़ी की ख़ासियत- इसका स्वाद, समृद्धि और अनोखेपन का जिक्र किया है, जो आंध्र प्रदेश के आदिवासी कॉफी उत्पादकों के लिए एक उपलब्धि है। गिरिजन कॉफी कॉरपोरेशन (जीसीसी) उन्हें व्यवस्थित तरीके से कॉफी उगाने के लिए प्रोत्साहित कर रहा है और हर संभव तरीके से उनका समर्थन कर रहा है।

मिट्टी की बनावट और जलवायु इस कॉफी की विशिष्टता में योगदान करती है। जीसीसी आदिवासियों को कॉफी की जैविक खेती के लिए भी मदद कर रहा है। अल्लूरी सीताराम राजू ज़िले में कॉफी की खेती 1960 और 1970 के दशक से चली आ रही है। हालाँकि पिछले 10 वर्षों में इस कॉफी परियोजना के लिए महत्त्वपूर्ण व्यवस्थित सुधार और नए सिरे से प्रोत्साहन देखा गया है। खेती में वृद्धि, ज़मीन में वृद्धि और समर्थन के परिणामस्वरूप यह सम्भव हुआ है। हम उनके बीच आर्थिक रूप से जागरूकता पैदा करके उन्हें कॉफी उत्पादन हेतु ऋण देकर, उन्हें बिचौलियों के शोषण से बचाकर अधिकतम सहायता देने की कोशिश कर रहे हैं।

जम्मू-कश्मीर में स्नो पीज़ की धूम

जम्मू-कश्मीर के लोगों के लिए समृद्धि और पहचान के नए द्वार खुल गए हैं, स्थानीय खाद्य स्नो पीज़ पहली बार लंदन भेजे जा रहे हैं। 'मन की बात' के 111वें सम्बोधन में पुलवामा से स्नो पीज़ के निर्यात की सराहना करते हुए प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने अनोखी सब्जी को वैश्विक मानचित्र पर लाने के **अब्दुल रशीद मीर** के प्रयास की सराहना की। चकूरा के अब्दुल रशीद मीर ने गाँव के अन्य किसानों के साथ मिलकर स्नो पीज़ उगाना शुरू किया।

जब प्रधानमंत्री ने मेरा नाम लिया, तो मुझे बेहद खुशी हुई। मेरा नाम लेकर प्रधानमंत्री जी ने जम्मू-कश्मीर और पूरे भारत के सभी छोटे किसानों को सम्मानित किया, जिससे मुझे बहुत खुशी हुई। यह इस बात को दर्शाता है कि प्रधानमंत्री देश के छोटे और सीमांत किसानों के बारे में कितने चिंतित हैं। मुझे हर दिन अलग-अलग लोगों के फोन आते हैं, जो उन्हें अलग-अलग मात्रा में बीज उपलब्ध कराने के लिए कहते हैं और जिस तरह से प्रधानमंत्री ने हमारे उत्पाद का जिक्र किया, उससे उम्मीद है कि इस सीजन में हमारे पास इसकी भारी माँग होगी।

हमने सब्जियाँ निर्यात करने वाले स्थानीय उद्यमी कवसरा रशीद के साथ पीज़ की एक नई किस्म उपलब्ध कराने के लिए समझौता किया। इसके बारे में उन्होंने कहा कि इससे हमें काफी लाभ होगा। उन्होंने हमें सब कुछ अच्छी तरह समझा दिया। उसके बाद हमने स्नो पीज़ की खेती करने का निर्णय किया। मैंने आगे बढ़ने का निर्णय किया और पाँच से छह किलोमीटर के दायरे से समान विचारधारा वाले किसानों को इकट्ठा किया। मैंने उन्हें समझाया कि हम पारम्परिक पीज़ की जगह पीज़ की एक नई किस्म की खेती करेंगे। सभी ने सहमति जताई और इस पहल में भागीदारी करने के लिए उत्साह दिखाया।

देश-विदेश में बढ़ रहा संस्कृत का मान

“संस्कृत की प्राचीन भारतीय ज्ञान और विज्ञान की प्रगति में बड़ी भूमिका रही है। आज के समय की माँग है कि हम संस्कृत को सम्मान भी दें और उसे अपने दैनिक जीवन से भी जोड़ें।”

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी
(‘मन की बात’ सम्बोधन में)

“प्रधानमंत्री और शासन के अन्य माननीय सदस्य, जब भी अवसर मिलता है, तो संस्कृत का व्यावहारिक प्रयोग करते हैं। इस प्रकार के उदाहरण सामान्य जनमानस के लिए बहुत प्रेरणादायी सिद्ध होते हैं।”

-डॉ. बलदेवानन्द सागर
संस्कृत समाचार प्रसारक,
आकाशवाणी एवं दूरदर्शन

भारत संस्कृत और तमिल जैसी प्राचीन भाषाओं के साथ-साथ कई समृद्ध भाषाओं का देश है। संस्कृत, भारतीय सभ्यता और संस्कृति की आधारशिला रही है। यह दर्शन, साहित्य और विज्ञान की भाषा के रूप में जानी जाती है। ऐसे समय में जब सनातन भारतीय ज्ञान परम्परा और वैदिक साहित्य की प्रासंगिकता और भी अधिक बढ़ गई है, तब ऐसा कहना बिल्कुल उचित होगा कि संस्कृत भाषा के पुनरुत्थान के लिए यही समय है, सही समय है। सरकार भी इस बात को बखूबी समझती है। सरकार विश्वविद्यालयों को सहयोग देकर और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से संस्कृत के अध्ययन को बढ़ावा देकर इस भाषा के संरक्षण और सम्वर्द्धन में सक्रिय भूमिका निभा रही है।

2015 में शिक्षा मंत्रालय (तब मानव संसाधन विकास मंत्रालय) ने श्री एन. गोपालस्वामी, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति के चांसलर की अध्यक्षता में संस्कृत के विकास के लिए एक दीर्घकालिक दृष्टिकोण और रोडमैप सुझाने के लिए एक समिति गठित की। समिति ने फरवरी, 2016 में अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की।

इसकी मुख्य सिफारिशों में शिक्षक प्रशिक्षण, संस्कृत शिक्षा वर्षम् (संस्कृत शिक्षण वर्ष), संस्कृत स्कूल और कॉलेजों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (ICT) के प्रयोग जैसे विषय शामिल थे। इस रिपोर्ट को सभी सम्बन्धित संस्थानों को प्रसारित किया गया और उस समय के मौजूदा नीतिगत ढाँचे के अंदर लागू किए जा सकने वाले प्रस्तावों को त्वरित लागू करने का आदेश दिया गया।

16 मार्च, 2020 को केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय विधेयक, 2020 संसद में पारित हो गया। इससे देश के अनगिनत संस्कृत प्रेमियों, विद्वानों एवं संस्कृत भाषी लोगों की लम्बित माँग पूरी हुई। इससे संस्कृत भाषा के शिक्षण संस्थानों को विश्वस्तरीय पहचान मिली। केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय अधिनियम, 2020 लागू होते ही केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली और राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, तिरुपति ‘केंद्रीय विश्वविद्यालय’ बन गए। इससे उन्हें पाठ्यक्रम चुनने की आज़ादी, ज्यादा सरकारी मदद और राष्ट्रीय-अंतरराष्ट्रीय पहचान मिली। कुल मिलाकर इस अधिनियम ने भारत में संस्कृत शिक्षा और शोध को मजबूत किया है।

संस्कृत के पठन-पाठन के लिए ऊपर बताए गए तीन प्रीमियम संस्कृत विश्वविद्यालयों के अलावा कई अन्य संस्थानों और विश्वविद्यालयों में भी संस्कृत का अध्यापन कार्य चल रहा है। 19 जून, 2024 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने बिहार के राजगीर में नालंदा विश्वविद्यालय के नए परिसर का उद्घाटन किया। इस नालंदा विश्वविद्यालय में भी हिन्दू अध्ययन (सनातन धर्म) में स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम के अंतर्गत संस्कृत को भाषा के तौर पर पढ़ाया जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 में संस्कृत शिक्षा पर विशेष बल दिया गया है। इस नई शिक्षा नीति में कम से कम ग्रेड 5 तक, पसंदीदा तौर पर ग्रेड 8 तक और उससे आगे भी मातृभाषा/स्थानीय भाषा/क्षेत्रीय भाषा को ही शिक्षा का माध्यम रखने पर विशेष जोर दिया गया है। विद्यार्थियों को स्कूल के सभी स्तरों और उच्च शिक्षा में संस्कृत को एक विकल्प के रूप में चुनने का अवसर देने का भी प्रावधान है। NEP 2020 की घोषणा के बाद से संस्कृत को लेकर लोगों में रुचि बढ़ रही है।

संस्कृत एक वैज्ञानिक भाषा है, इस वैज्ञानिक भाषा को आज तकनीक से जोड़कर लोगों के प्रयोग के लिए आसान बनाया जा रहा है। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर के शोधकर्ताओं ने संस्कृत भाषा को सुलभ बनाने के लिए एक डिजिटल सिस्टम विकसित किया है। उन्होंने इसे बनाने के लिए अत्याधुनिक मशीन लर्निंग तकनीकों और संस्कृत के पारम्परिक भाषाई ज्ञान का प्रभावी ढंग से सम्मिश्रण किया है।

प्रधानमंत्री ने 12 दिसम्बर, 2023 को ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (जीपीएआई) शिखर सम्मेलन के दौरान भारत में सैकड़ों भाषाओं और हजारों बोलियों का जिक्र करते हुए डिजिटल समावेशन बढ़ाने और स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए एआई का उपयोग करने का सुझाव दिया। उन्होंने संस्कृत भाषा के समृद्ध ज्ञान आधार और साहित्य को आगे ले जाने और वैदिक गणित के लुप्त संस्करणों को फिर से जोड़ने के लिए एआई का उपयोग करने का भी सुझाव दिया।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी संस्कृत भाषा के प्रसार के लिए स्वयं भी सदैव प्रयासरत रहते हैं। प्रधानमंत्री 'मन की बात' कार्यक्रम में भी संस्कृत भाषा के संदर्भ में लगातार बात करते रहते हैं। जून, 2024 के संस्करण के अलावा भी उन्होंने कई एपिसोड में संस्कृत पर बात की है।

पिछले वर्ष अगस्त महीने में, 'मन की बात' की 104वीं कड़ी में भी प्रधानमंत्री ने विश्व संस्कृत दिवस की शुभकामनाएँ देते हुए संस्कृत भाषा के बारे में बात करते हुए कहा था, "हम सब जानते हैं कि संस्कृत दुनिया की सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है। इसे कई आधुनिक भाषाओं की जननी भी कहा जाता है। संस्कृत अपनी प्राचीनता के साथ-साथ अपनी वैज्ञानिकता और व्याकरण के लिए भी जानी जाती है। भारत का कितना ही प्राचीन ज्ञान हजारों वर्षों तक संस्कृत भाषा में ही संरक्षित किया गया है।"

संस्कृत सबसे प्राचीन भाषाओं में से एक है, साथ ही यह आधुनिक भी है। इसकी वैज्ञानिक संरचना और इसकी उच्चारण की सूक्ष्मता, स्पष्टता इसे कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग से लेकर अंतरिक्ष विज्ञान तक किसी भी क्षेत्र में प्रासंगिक बनाती है। संस्कृत प्राचीन ग्रंथों की भाषा के साथ-ही-साथ एक सशक्त आधुनिक भाषा भी है।

बेंगलुरु में संस्कृत वीकेंड

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 111वें 'मन की बात' सम्बोधन में बेंगलुरु में शुरू की गई एक अनूठी पहल का ज़िक्र किया, जिसका नाम है 'संस्कृत वीकेंड'। शहर के कब्बन पार्क में सदियों पुराने पेड़ों की छत्रछाया में बच्चे, युवा और बुजुर्ग संस्कृत में बातचीत करने के लिए इकट्ठा होते हैं।

"प्रधानमंत्री द्वारा प्रतिष्ठित राष्ट्रव्यापी कार्यक्रम 'मन की बात' के 111वें एपिसोड में ज़िक्र किए जाने पर हमें सम्मानित महसूस हो रहा है और तब से हम संस्कृत भाषा के प्रति और अधिक सपने सँजो रहे हैं। यह रविवार की सुबह थी और प्रधानमंत्री ने 'मन की बात' में संस्कृत वीकेंड का ज़िक्र किया। प्रधानमंत्री के नेतृत्व और प्रोत्साहन ने इस प्राचीन भाषा के प्रति नए सिरे से रुचि पैदा करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हम संस्कृत को आगे बढ़ाने तथा इसे विश्व के हर कोने तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध हैं।"

– समष्टि गुब्बी
संस्थापक, संस्कृत वीकेंड

अद्यतनसन्दर्भे संस्कृतभाषायाः प्रासङ्गिकता

डॉ. बलदेवानन्द-सागरः
संस्कृतवार्ताप्रसारकः,
आकाशवाणी तथा दूरदर्शनम्

नातिचिरं (30 जून, 2024) आकाशवाण्याः संस्कृतवार्ताप्रसारणेन गौरवपूर्णानि 50- वर्षाणि पूर्णतां नीतानि। अस्मिन् अवसरे संस्कृतवार्ताप्रशंसकाः संस्कृतसमाजस्य बहुसंख्यकसंस्थाः च हर्षं प्रकटितवन्तः, तथा च केचन श्रोतारः दर्शकाः च आकाशवाणी-दूरदर्शनयोः विभिन्नकेन्द्रेभ्यः संस्कृतवार्तानां प्रसारणस्य अवधिं आवृत्तिं च वर्धयितुम्, अन्येषां च संस्कृतकार्यक्रमाणां शुभारम्भार्थं साग्रहम् अनुरोधं कृतवन्तः। अस्मिन् अवसरे आदरणीयप्रधानमन्त्री स्वस्य 'मन की बात'- इत्यस्य 111-तमे प्रकरणे आकाशवाण्याः सम्पूर्णपरिवाराय संस्कृतवार्ताप्रसारणस्य 50-वर्षाणां गौरवपूर्ण-सम्पूर्तेः कृते हार्दिकम् अभिवादनं कृतवान्।

सौभाग्येन अहम् आकाशवाण्याः संस्कृतवार्ता-प्रसारणसेवायाम् आरम्भादेव अवसरं प्राप्तवान्, अतः मम कृते अस्य अवसरस्य विशेषं महत्त्वम् अस्ति। संस्कृतभाषायाः, भारतस्य ज्ञानविज्ञानपरम्पराणां च विषये अनेकेषु मञ्चेषु अनेकप्रकारकाः प्रश्नाः सकौतुकम् उत्थाप्यन्ते। तेषु एकः बहुचर्चितः प्रश्नः अस्ति यत् संस्कृतभाषायाः अध्ययनं किमर्थम्? एतस्य उत्तररूपेण विद्वांसः महाचिन्तकाः च यत्किमपि उक्तवन्तः, तत्तु संक्षेपेण एवमस्ति -

1. भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा।

2. संस्कारयति यत् तत् संस्कृतम्।

3. 'संस्कृतम्' भारतस्य आत्मा अस्ति।

4. भारतीय-ज्ञानविज्ञानयोः वाहिकास्ति - संस्कृतभाषा,

यथा –

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषदस्तथा।

रामायणं भारतं च गीता षड्दर्शनानि च।

5. संस्कृतवर्णमाला वैज्ञानिकी अस्ति।

6. संस्कृतभाषा वैज्ञानिकी, गणितात्मिका, संगीतमयी, स्वरविज्ञानात्मिका च भाषा अस्ति।

7. अद्यतनाः वैज्ञानिकाः एतत् सप्रमाणं सिद्धं कृतवन्तः यत् संस्कृतोच्चारणद्वारा अन्यभाषाणाम् उच्चारणं सहजं सुलभं च भवति, मस्तिष्कस्य उभयभागयोः विकासः च जायते।

8. अन्याः भारतीयाः भाषाः संस्कृतस्य शब्द-सम्पदा समृद्धाः सन्ति।

9. संस्कृतं न केवलं वर्गविशेषस्य भाषा, अपितु सर्वेषां भाषा एव।

10. अतः एव एषा देवभाषा अस्ति, सर्वासां भाषितभाषाणां जननी च।

दुर्दैवविपाकात् राजनैतिककारणात् वा संस्कृतशिक्षणस्य क्षयः जातः आसीत्, परन्तु अद्यतनं व्यापकं परिदृश्यं दृष्ट्वा संस्कृतभाषायाः भारतीयसांस्कृतिकपरम्पराणां च भावि उज्ज्वलम् इति भासते। हिन्दी-इत्यादिभाषाम् इव अधुना संस्कृतपत्रकारितायाः क्षेत्रमपि अतीव तीव्रगत्या विकसितं जायते। अधुना भारते, भारतात् बहिश्च संस्कृतभाषायां बहुविधानि चलच्चित्राणि विनिर्मीयन्ते, तथा च एतानि चलच्चित्राणि राष्ट्रिय-अन्तर्राष्ट्रिय-स्तरयोः पुरस्कारान् अपि प्राप्नुवन्ति। द्वाभ्याम् अधिकानि ऑनलाइन्-प्रसारण (रेडियो) तन्त्राणि प्रवर्तन्ते यानि अहर्निशं संस्कृतभाषायाः कार्यक्रमान् प्रसारयन्ति।

एतेषां स्मरणीयकार्याणां निरन्तरप्रगतेः श्रेयः किं वयम् आकाशवाण्या प्रसार्यमाणानां संस्कृतवार्तानां कृते दातुं शक्नुमः वा ?

नूतनराष्ट्रियशिक्षानीत्यादिना संस्कृतज्ञानस्य व्यापकप्रसाराय वर्तमानसर्वकारेण अनेके उपायाः कार्यान्विताः इत्यपि सुतरां हर्षस्य विषयः। आदरणीयः प्रधानमन्त्री अन्ये च सर्वकारस्य माननीयाः सदस्याः, यदा यदा अवसरं प्राप्नुवन्ति तदा तदा संस्कृतस्य व्यावहारिकं प्रयोगं कुर्वन्ति। एतादृशानि उदाहरणानि सामान्यजनस्य कृते अतीव प्रेरणाप्रदानि भवन्ति।

किञ्चित्कालपूर्वं यावत् इदम् आक्षिप्यते स्म यत् संस्कृताध्ययनेन आजीविकायाः अवसराः अत्यल्पाः वर्तन्ते इत। अद्य स्थितिः परिवर्तिता अस्ति। एकतः सम्पूर्णे विश्वे योग आयुर्वेद आदिनां, सञ्चार-माध्यमेषुच संस्कृत-पत्रकारितायाः च प्रवृत्तिः वर्धमाना अस्ति, अपरतः तु अद्यतन-यूनां कृते आजीविकायाः अवसराः दिने दिने विवर्धन्ते। आगच्छन्तु, वयं सर्वे मिलित्वा संस्कृतविद्या याः दिव्यानां परम्पराणां निर्वहणं कुर्याम।

संस्कृत नाट्यप्रयोग समये राष्ट्रियनाट्यविद्यालयछात्रैः सह बलदेवानन्दसागरः

आज के सन्दर्भ में संस्कृत भाषा की प्रासङ्गिकता

हाल ही में, 30 जून, 2024 को आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले संस्कृत समाचार प्रसारण ने अपने गौरवशाली 50 वर्ष पूरे किए। इस अवसर पर संस्कृत समाचार के प्रशंसकों और संस्कृत समाज के बहुसंख्यक संस्थानों ने अपनी प्रसन्नता व्यक्त की और कुछ श्रोताओं ने तो आकाशवाणी और दूरदर्शन के विभिन्न केन्द्रों से संस्कृत समाचार के प्रसारण की अवधि और आवृत्ति बढ़ाने और अन्य संस्कृत कार्यक्रमों के प्रसारणों को आरम्भ करने का भी आग्रह किया है। इस अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी ने अपने 'मन की बात' के 111वें अंक में संस्कृत समाचार प्रसारण के गौरवशाली 50 वर्ष पूरे होने पर आकाशवाणी परिवार को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ दी हैं।

चूँकि मुझे आकाशवाणी की संस्कृत समाचार सेवा से आरम्भ से ही जुड़ने का सौभाग्य मिला है, इसलिए यह अवसर मेरे लिए विशेष महत्त्व का है। संस्कृत भाषा और भारत की ज्ञान-विज्ञान की परम्पराओं के बारे में अनेक मंचों पर अनेक प्रकार के प्रश्न और जिज्ञासाएँ की जाती हैं। उनमें से एक सर्वाधिक चर्चित प्रश्न है कि संस्कृत भाषा का अध्ययन क्यों किया जाए? इसके उत्तर में विद्वानों और महान् चिंतकों ने जो कुछ कहा है, संक्षेप में इस प्रकार से है-

1. भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा अर्थात संस्कृत और भारतीय संस्कृति, इस महान् राष्ट्र का गौरव हैं।

2. संस्कारयति यत् तत् संस्कृतम् अर्थात जो संस्कार प्रदान करें, उसी को संस्कृत कहते हैं।

3. 'संस्कृतम्' भारतस्य आत्मा अस्ति अर्थात 'संस्कृत भाषा' भारत की आत्मा है।

4. भारतीय-ज्ञानविज्ञानयोः वाहिकास्ति - संस्कृतभाषा,

यथा –

चतुर्वेदाः पुराणानि सर्वोपनिषदस्तथा।
रामायणं भारतं च गीता षड्दर्शनानि च।।

अर्थात- भारतीय-ज्ञान-विज्ञान की वाहिका है – संस्कृत भाषा

जैसे कि चारों वेद, उपवेद और छह वेदांग, 18 पुराण और 18 उपपुराण, सभी उपनिषद्, रामायण, महाभारत, श्रीमद्भगवद्गीता और छह दर्शन।

5. संस्कृत की वर्णमाला वैज्ञानिक है।

6. संस्कृत भाषा वैज्ञानिक, श्रेष्ठतम-उच्चारण शास्त्रयुक्त, गणितात्मक, संगीतात्मक और ध्वनि विज्ञान से परिपूर्ण भाषा है। (It is Scientific, Phonetic, Mathematical, Musical and Perfect language)

7. आज के वैज्ञानिकों ने सप्रमाण सिद्ध किया है कि संस्कृतोच्चारण से अन्य भाषाओं का उच्चारण सहज-सुलभ हो जाता है और मस्तिष्क के दोनों भागों का विकास होता है।

8. संस्कृत की शब्द-सम्पदा से ही अन्य भारतीय भाषाएँ समृद्ध हैं।

9. संस्कृत केवल वर्ग विशेष की भाषा नहीं है, अपितु सभी की बोली है।

10. अतएव, यह देवभाषा है और सभी बोलियों की जननी है।

कालक्रम से और अन्य राजनैतिक कारणों से संस्कृत-विद्या का अपह्रास हुआ था, किन्तु आज का व्यापक परिदृश्य देखने के बाद प्रतीत होता है कि संस्कृत भाषा और भारतीय सांस्कृतिक परम्पराओं का भविष्य उज्ज्वल है।

हिन्दी और दूसरी भाषाओं के समान अब संस्कृत पत्रकारिता के क्षेत्र का भी बहुत तीव्र गति से विकास हो रहा है। भारत में और भारत के बाहर भी अब संस्कृत में अनेक प्रकार की फिल्में बनाई जा रही हैं और ये फिल्में राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत भी हो रही हैं। दो से अधिक ऑनलाइन रेडियो हैं, जो रात-दिन संस्कृत-भाषिक कार्यक्रमों का प्रसारण कर रहे हैं। इन प्रशस्त कार्यों की निरंतर प्रगति के लिए क्या हम आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले संस्कृत समाचार प्रसारण को श्रेय दे सकते हैं?

यह भी प्रसन्नता का विषय है कि प्रवर्तमान शासन ने नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति और अन्य माध्यमों से संस्कृत-विद्या के व्यापक प्रचार-प्रसार के लिए अनेक उपाय क्रियान्वित किए हैं। माननीय प्रधानमंत्री और शासन के अन्य माननीय सदस्य, जब भी अवसर मिलता है, तो संस्कृत का व्यावहारिक प्रयोग करते हैं। इस प्रकार के उदाहरण, सामान्य जनमानस के लिए बहुत प्रेरणादायी सिद्ध होते हैं।

कुछ समय पहले तक यह आक्षेप लगाया जाता था कि संस्कृत पढ़ने वालों के लिए आजीविका के अवसर बहुत कम हैं। आज स्थिति बदल गई है। एक ओर पूरे विश्व में योग, आयुर्वेद आदि और संचार माध्यमों में संस्कृत-पत्रकारिता का प्रचलन बढ़ रहा है, तो दूसरी ओर आज के युवावर्ग के लिए आजीविका के अवसर दिनो-दिन बढ़ते जा रहे हैं। आगच्छन्तु, वयं सर्वे मिलित्वा संस्कृतविद्यायाः दिव्यानां परम्पराणां निर्वहणं कुर्याम।

संस्कृत थिएटर प्रयोग के दौरान नेशनल स्कूल ऑफ ड्रामा के छात्रों के साथ बलदेवानंद सागर

मन की बात

प्रतिक्रियाएँ

Narendra Modi

Today marks a special milestone as @AkashvaniAIR's Sanskrit Bulletin completes 50 years of broadcast!

One District One Product

During #MannKiBaat, Hon'ble PM @narendramodi spoke about #ArakuCoffee from #AndhraPradesh, a globally awarded coffee known for its rich flavour and aroma. It has helped double farmers' income in the region — a perfect success story of #vocalforlocal.

PM - Mann Ki Baat
Vocal for Local

مودی کا 65 کروڑ ووٹروں کا شکریہ

योग, भारतीय भाषा, संस्कृति का प्रसार गौरव का क्षण: मोदी

ਅਰਾਕੂ ਕੌਫੀ ਦੀ ਹਮਾਇਤ ਕਰਨ ਲਈ ਨਾਇਡੂ ਵੱਲੋਂ ਪ੍ਰਧਾਨ ਮੰਤਰੀ ਦਾ ਧੰਨਵਾਦ

PM thanks citizens for faith in Constitution on Mann ki Baat

HT Correspondent

NEW DELHI: Prime Minister Narendra Modi on Sunday thanked citizens for reiterating their "unwavering faith" in the Constitution and also lauded the Election Commission of India for smooth conduct of the recently concluded general elections, in the 111th episode of his monthly "Mann ki Baat" broadcast that was also the first one after he assumed office for a third consecutive term.

The flagship radio programme resumed on Sunday after a three-month pause in compliance with the Model Code of Conduct enforced before the 18th Lok Sabha elections. The last episode aired on February 24.

"Today I also thank the countrymen for having reiterated their unwavering faith in our Constitution and the democratic systems of the country. The 2024 elections were the biggest elections in the world. An election as big as this in which 65 crore people cast their votes, has never taken place in any other country in the world. For this, I congratulate the Election Commission and everyone involved in the voting process."

CONTINUED ON →9

ମହାପ୍ରଭୁ ଶ୍ରୀଜଗନ୍ନାଥଙ୍କ ଆଶୀର୍ବାଦ ଲୋଡ଼ିଲେ

संविधान, लोकतंत्र में देश की अटूट आस्था, समृद्ध संस्कृति बढ़ाएं आगे : मोदी

બંધારણ, લોકશાહી પરનો વિશ્વાસ દોહરાવવા બદલ દેશનો આભાર : મોદી

PM के 'मन की बात' में टैगोर, आंध्र की कॉफी और 'एक पेड़ मां के नाम'

हूल दिवस आदिवासी समाज के साहस और संघर्ष को समर्पित एक महान अवसर : पीएम

पीएम मोदी ने 'मन की बात' की 111 वी कड़ी में कहा

'चीयर4भारत' से करें पेरिस ओलंपिक के लिए प्रोत्साहित

అమ్మ పేరిట మొక్క

PM Modi highlights Karthumbi umbrellas made by Kerala tribal women

आईच्या नावाने एक झाड लावा

पंतप्रधान मोदींचे आवाहन; भारतीय क्रिकेट संघास दिल्या शुभेच्छा

कार्थुम्बीचा उल्लेख

मन की बात में बोले मोदी- ओलिंपिक में मेडल के साथ-साथ दिल भी जीतेंगे भारतीय खिलाड़ी

Karthumbi umbrella, praised by PM, is a success story of tribal women

പ്രധാനമന്ത്രിയുടെ 'മൻ കി ബാത്തി'ൽ അട്ടപ്പാടിയുടെ കാർത്തുമ്പി കുട

Mann ki Baat: PM Thanks Voters, EC for LS Polls

Hindustan Times

Karthumbhi umbrellas, Araku coffee, snow peas find mention in Modi's Mann ki Baat

NDTV

In Mann Ki Baat, PM Modi Talks Of New Campaign To Honour Mothers

abp न्यूज़

Mann Ki Baat: मां के नाम एक पेड़, योग, पर्यावरण..., 4 महीने बाद पीएम मोदी ने मन की बात में कहीं ये खास बातें

DH

Modi highlights several firsts of athletes, hails preparations for Olympics in his 'Mann ki Baat'

प्रभात खबर

Mann ki Baat: स्वतंत्रता सेनानियों सिदो-कान्हू का बलिदान आज भी देशवासियों को करता है प्रेरित, पीएम मोदी ने कहा

Greater Kashmir

PM Modi thanks citizens in 'Mann ki Baat' programme for showing 'unwavering support' in Lok Sabha polls

DAILYEXCELSIOR.COM

Mann Ki Baat | PM Hails Snow Peas Export To London From Jammu And Kashmir

जनसत्ता

PM Modi Mann Ki Baat: ओलंपिक से लेकर मां की याद तक, चुनाव जीतने के बाद पहली मन की बात में क्या-क्या बोले PM मोदी

tv9 भारतवर्ष

Mann Ki Baat : मैं अपने परिवार के बीच आया हूं...'मन की बात' कार्यक्रम में बोले पीएम नरेंद्र मोदी

bt Business Today

Mann Ki Baat: Here's why PM Modi mentioned 'Sanskrit' in his episode after 3 months

Business Standard

Indian culture earning glory around world: PM Modi during Mann Ki Baat

सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार